

श्रमयोग पत्र

सेवा में

वर्ष : 07

अंक : 02 (हिन्दी मासिक) देहरादून, 01 मई 2021

मूल्य - 5.00 ₹ प्रति

पृष्ठ-8

वार्षिक मूल्य -100 ₹

स्वास्थ्य व्यवस्था ध्वस्त

महामारी को नियंत्रित करने के लिये कार्यरत वैज्ञानिक संस्थान भी चमत्कारों पर कर रहे थे भरोसा

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

कोरोना महामारी की दूसरी लहर के दौरान स्वास्थ्य व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है। दवाईयों, अस्पताल में बेड व ऑक्सीजन के लिए हा-हा कार मचा है। देश भर में अब तक 2 लाख से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। देश के अलग-अलग राज्यों के अस्पतालों में ऑक्सीजन की कमी की वजह से आये दिन संक्रमितों की मौत की खबर आ रही है। चिकित्सक व अन्य मेडिकल स्टाफ 24 घंटे काम करने के बाद भी मरीजों को नहीं बचा पा रहे हैं।

सवाल उठता है हमारा तंत्र इस तरह विफल क्यों हो गया? यह बात सही है कि संक्रमितों की बहुत बड़ी संख्या एक भारी चुनौती है लेकिन पिछले एक वर्ष सरकार ने क्या तैयारियाँ की यह प्रश्न तो उठता है। पिछले वर्ष फरवरी-मार्च में जब कोरोना के मामले अपने शुरुआती दौर में थे तब हमारा राजनैतिक नेतृत्व इसकी विभिन्निका का अन्दाजा लगाने में पूरी तरह से विफल रहा और अदूरदर्शी तंत्र भी ठोस तैयारियों की तरफ आगे नहीं बढ़ा। जब तैयारियों का वक्त था तब चमत्कार की ताकत पर भरोसा किया जा रहा था। बड़े दुःख की बात है कि वैज्ञानिक चेतना फेलाने का काम करने वाले

संस्थान, चिकित्सा हेतु नियोजन करने वाले लोग भी थाली बजाने वालों की कतार में शामिल रहे, राजनिती व नौकरशाही का भ्रष्ट गठजोड़ सेनेटाइजर, चिकित्सा उपकरणों की खरीद में भ्रष्टाचार के रास्ते ढूँढता रहा। कोरोना महामारी की पहली लहर के दौरान जब दुनिया भर के देश आधुनिक तकनीकी के उपयोग के द्वारा महामारी को नियंत्रित करने हेतु नियोजन कर रहे थे, तब हमारी राजसत्ता चमत्कारों के भरोसे महामारी पर नियंत्रण करने का स्वप्न देख रही थी, नतीजा आज हमारे नागरिक दवाओं के लिए मोहताज हैं। अस्पतालों में खाली बेड नहीं हैं व ऑक्सीजन की कमी बनी हुई है।

मार्च में जब सरकार द्वारा गठित विशेषज्ञों का समूह दूसरी लहर की चेतावनी दे रहा था तब हमारे नीति नियंत्रणों ने उसे अनसुना कर कुंभ कराना जरूरी समझा व अपने स्वास्थ्य महकमे व पुलिस महकमों के लोगों को जो उस दौरान महामारी के नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे कुंभ में उलझा व थका दिया। उत्तर प्रदेश के पंचायती चुनावों को भी टाला जा सकता था व देश के पाँच राज्यों के चुनावों को कम समय में निपटारा जा सकता था, परंतु हुक्मरानों की

प्राथमिकताएं हमेशा से अलग रही हैं। हमारी सरकार कोविड को समझने में पूरी तरह असफल रही है, अभी भी तीसरी लहर के नुकसान को कम करने के लिए नियोजन की आवश्यकता है। संबंधित संस्थानों को स्वतंत्रता पूर्वक काम करने देने की जरूरत है। उन पर वेवजह दबाव बनाकर हम इस महामारी पर विजय प्राप्त नहीं कर सकते। हमें विशेषज्ञों को सुनना पड़ेगा व राजनैतिक नफे नुकसान की मानसिकता से बाहर निकल कर काम करना होगा।

देश में टीकाकरण का मुद्दा अभी पूरी तरह उलझा हुआ है। टीकाकरण की जिम्मेदारी पूरी तरह सरकार को लेनी चाहिए व प्रत्येक नागरिक को निशुल्क टीका उपलब्ध करावना चाहिए। हमें अपने प्राथमिक व सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों के स्तर पर टेस्टिंग, इलाज व टीकाकरण की ठोस सुविधाएं उपलब्ध करवानी होंगी। ऑक्सीजन का विकेन्द्रीकृत उत्पादन शुरू करना होगा। इलाज की जरूरत सिर्फ शहर के लोगों को नहीं है, ग्रामीण क्षेत्रों में भी इलाज की ठोस व्यवस्था करनी होगी। याद रहे महामारियों को चमत्कारों के भरोसे नहीं ठोस प्रबंधन व मजबूत स्वास्थ्य सुविधाओं के द्वारा ही मात दी जा सकती है।

1 मई : अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस

श्रमयोग पत्र ब्यूरो

1 मई का दिन पूरी दुनिया में अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस के रूप में मनाया जाता है। अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिये इतिहास में दुनियाभर के मजदूरों ने अनेक संघर्ष किये। जिनमें 4 मई 1886 के दिन अमेरिका के शिकागो शहर के हेयमार्केट में काम के आठ घंटे की माँग को लेकर किया गया प्रदर्शन महत्वपूर्ण है। इस प्रदर्शन में हजारों मजदूरों ने भाग लिया था और पुलिस द्वारा मजदूरों पर की गई फायरिंग में 4 मजदूर शहीद हुए थे।

14 जुलाई 1889 के दिन पेरिस में 20 देशों के समाजवादियों व मजदूर वर्ग के प्रतिनिधियों की सभा में दूसरे इन्टरनेशनल का गठन किया गया। दूसरे इन्टरनेशनल द्वारा मजदूरों के 4 मई 1886 के संघर्ष के प्रतीक के रूप में 1 मई को अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस मनाने का निर्णय लिया गया व काम के आठ घंटे की माँग को लेकर संघर्ष करने का निर्णय लिया गया। दूसरे इन्टरनेशनल में यह भी कहा गया कि दुनिया भर के मजदूरों की समस्याएँ एक जैसी हैं। अतः उनको संगठित होकर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिये संघर्ष करना होगा और नारा दिया गया "दुनिया के मजदूरों एक हो"। तभी से दुनियाभर के मजदूर 1 मई के दिन मजदूर दिवस मनाते हैं। भारत में मजदूर दिवस मनाने की शुरुआत 1923 में हुई जब चेन्नई



(मद्रास) में 1 मई 1923 को लेबर किसान पार्टी द्वारा मजदूर दिवस मनाया गया। भारत सहित दुनिया भर के मजदूरों ने काम के आठ घण्टे, अधिक काम करने पर ओवर टाइम का भुगतान, सवेतन साप्ताहिक अवकाश, पेन्शन व अन्य सामाजिक सुरक्षाओं का अधिकार लम्बे संघर्षों के बाद प्राप्त किया था। लेकिन फिर से उन अधिकारों को खत्म किया जा रहा है। आज भारत सहित दुनियाभर में पूंजीपतियों ने कोरोना महामारी का बहाना लेकर अपना मुनाफा बढ़ाने के लिये मजदूरों का शोषण तेज कर दिया है। काम के घण्टे बढ़ाये जा रहे हैं व मजदूरी में भारी कटौती की जा रही है। अधिकतर कारखानों में ठेका प्रथा पर मजदूरों की नियुक्ति की जा रही है व ठेका मजदूरों को श्रम अधिकारों से पूरी तरह वंचित रखा जा रहा है। असंगठित क्षेत्र के

मजदूरों की हालत और भी ज्यादा खराब है। भारत में कुल कार्यबल का 93 प्रतिशत असंगठित क्षेत्र में काम करता है। 2017-18 में हुए पी0एल0एस0एफ0 सर्वेक्षण के परिणामों के अनुसार इनमें से अधिकतर मजदूरों को न तो कोई सवेतनिक अवकाश मिलता है और न कोई सामाजिक सुरक्षा योजना का लाभ। इनके लिये काम के घण्टे भी नियत नहीं है। असंगठित क्षेत्र में काम करने वाली महिलाओं की स्थिति और भी ज्यादा खराब है उन्हें पुरुष मजदूरों की तुलना में समान काम की भी कम मजदूरी मिलती है। सामाजिक सुरक्षा योजनाएँ तो उनके लिये अभी बहुत दूर की बात है।

मई दिवस उक्त मुद्दों के विश्लेषण का दिन है मजदूरों के लिये संगठित होने की जरूरत को पहचानने का दिन है व अपने अधिकारों के लिये उठ खड़े होने का दिन है।

सातवें वर्ष में श्रमयोग पत्र



प्रिय साथियो,

श्रमयोग पत्र अब अपने सातवें वर्ष में है। सातवें वर्ष का दूसरा अंक लेकर हम आपके बीच हैं। श्रमयोग पत्र की पाठशाला में हम सभी साथी विगत छः वर्षों से सामुदायिक पत्रकारिता के पाठ पढ़ रहे हैं। अब से छः वर्ष पूर्व हमारे समुदाय में विशेषकर महिलाओं व बच्चों के पास न तो अपना कोई समाचार पत्र था न खुद को व्यक्त करने का स्थान। इन छः वर्षों में हमने अपने समुदाय की जरूरतों के विषयों पर लिखने की कोशिश की है व सबसे महत्वपूर्ण बात यह रही कि श्रमयोग पत्र अब हमारे सामुदायिक जीवन का हिस्सा है।

साथियो, आज हमारे समुदाय जहाँ एक ओर अपने रोजमर्रा के जीवन की चुनौतियों को हल करने के लिए संगठित प्रयासों से आगे बढ़ रहे हैं वहीं कई चुनौतियाँ हमारा पीछा कर रही हैं। धर्म व जाति के आधार पर समाज को बांटने के कुत्सित प्रयास चल रहे हैं। कोरोना महामारी के इस दौर में बेरोजगारी व कमजोर तबके का शोषण अपने चरम पर है। कमरतोड़ महंगाई ने जीना दूभर कर दिया है। देशभर में किसान आन्दोलनरत हैं क्योंकि सरकारें खेती-किसानी से जुड़ी समस्याओं को हल करने में असफल साबित हुई हैं। ऐसे में समुदायों की आपसी एकता भरोसा जगाती है साथ ही इस दौर में सामुदायिक पत्रकारिता हमारी ताकत है। इसके लिये हमें अपने पढ़ने व लिखने के कार्य को और तेज करना होगा। श्रमयोग पत्र के माध्यम से सामुदायिक पत्रकारिता आन्दोलन को मजबूत करने की जिम्मेदारी हम सबके ऊपर है।

साथियो, श्रमयोग पत्र श्रमयोग समुदाय के सदस्यों के बीच संवाद का महत्वपूर्ण जरिया है। हम आज भी श्रमयोग पत्र का संचालन सिर्फ आपके द्वारा अदा किये जाने वाले सदस्यता शुल्क से करते हैं व गैर-लाभकारी समाचार पत्र हैं। हम इस पत्र में निःशुल्क सामुदायिक विज्ञापनों के अतिरिक्त धन लेकर किसी तरह के सरकारी या निजी विज्ञापन नहीं छापते। पत्र की वार्षिक सदस्यता ₹100 व आजीवन सदस्यता ₹1000 है। आपके द्वारा ग्रहण की गयी पत्र की सदस्यता सामुदायिक पत्रकारिता के उत्थान की इस मुहिम को मजबूत करेगी। बीते छः वर्षों में आपसे मिले हर तरह के सहयोग के लिये आभार।

शुभ कामनाओं सहित

सम्पादक।

भीतर के पृष्ठों में

- गांव घर की खबर — पृष्ठ 2
- श्रमयोग के साथ मेरा सफर — पृष्ठ 3
- कहानी नमक — पृष्ठ 4
- प्राकृतिक चिकित्सा के सिद्धान्त — पृष्ठ 5
- कार्य क्षेत्र से मासिक रिपोर्ट — पृष्ठ 6
- कोरोना से जंग तकनीकी के संग प्रतियोगिता — पृष्ठ 8

मौसम का हाल

मई माह में तापमान में वृद्धि होगी। ऊँचाई वाले इलाकों में गरज के साथ छीटे पड़ने की सम्भावना है। मैदानी इलाकों में मौसम शुष्क रहेगा।

मई माह-सावधानियाँ

गर्मी व लू में शरीर की सुरक्षा करें। अपने आस-पास जंगलों में लगने वाली आग के प्रति सतर्क रहें। समय-समय पर साबुन से हाथों को धोयें। जरूरी होने पर ही घर से बाहर निकलें। घर से बाहर मास्क अवश्य पहनें। शारीरिक दूरी बनाए रखें। साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें। पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ पानी पियें।

मई माह में विशेष दिवस

- 01 मई — अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर दिवस
- 03 मई — विश्व प्रेस स्वतन्त्रता दिवस
- 07 मई — जमात-उल-विदा
- 22 मई — अन्तर्राष्ट्रीय जैव विविधता दिवस
- 26 मई — बुद्ध जयन्ती
- 29 मई — टीम श्रमयोग बैठक
- 30 मई — श्रम सखी बैठक

सम्पादकीय

भ्रष्ट सत्ता

रफाल विमान की खरीद में भ्रष्टाचार की खबरें फिर चर्चा में हैं। महाराष्ट्र में सरकार के गृहमन्त्री के ऊपर पुलिस से तस्ली कराने के आरोपों के बाद सीबीआई जाँच चल रही है। देश के सभी छोटे-बड़े राजनैतिक दलों के नेताओं पर कभी न कभी किसी न किसी राज्य व केन्द्र सरकार में रहते भ्रष्टाचार में लिप्त होने के आरोप लग चुके हैं और उनमें से कई सजा काट रहे हैं। सवाल उठता है कि हम कब तक भ्रष्टाचार की कहानियों को लिख व पढ़ कर बिना किसी ठोस समाधान के आगे बढ़ते रहेंगे ?

आज जब कोविड की दूसरी लहर ने अन्य सभी खबरों से ध्यान हटा दिया है तब भ्रष्टाचार पर बात करना अप्रासंगिक सा लग सकता है पर बात ऐसी नहीं है। भ्रष्टाचार आज हमारे समाज का ऐसा अंग बन चुका है कि वह कहाँ-कहाँ तक जा पहुँचेगा अब्दाजा लगाना मुश्किल है। आज दवा, आक्सीजन, एम्बुलेन्स से लेकर शमशान घाटों तक में कालाबाजारी का जो वीभत्स रूप हम देख रहे हैं वह भ्रष्ट राज सत्ता का ही व्यापक रूप है। गरीब तबके और खाते पीते एवं अमीरियत के बीच के गहराते अन्तर ने इस चुनौती को और विकराल कर दिया है।

आज दुनिया के अधिकांश देश भ्रष्टाचार की विभीषिका झेल रहे हैं। हमारे देश में तो हर आपदा के बाद उस दौरान नौकशाही व राजनितिज्ञों द्वारा किये गये भ्रष्टाचार की कहानियाँ सुनाई देती रही हैं। प्रश्न उठता है अखिर इसकी जड़ कहाँ है। हम अब तक सरकारी तन्त्र को इतना पारदर्शी क्यों नहीं बना पाये हैं कि उसके अन्दर चल रही निर्णय व भुगतान प्रक्रिया के अनुश्रवण तक आमजन की पहुँच हो सके। हालाँकि सूचना के अधिकार कानून ने काम कुछ आसान किया है पर देश के हर नागरिक के स्तर तक हम इस व्यवस्था को नहीं ले जा पाये हैं। और फिर निजी क्षेत्र इससे बाहर कब तक रहेगा। आज कॉरपोरेट घरानों का भारी भ्रष्टाचार हम सबकी नजरों में आ ही नहीं पाता। रफाल विमान की खरीद में भ्रष्टाचार की खबरें बार-बार चर्चा में आने के बाद भी सही तथ्यों तक पहुँचना दुष्कर या असम्भव कार्य कहा जा सकता है। निजी क्षेत्र किस आधार पर सूचना देने में छूट पाता है, यह भी समझ के बाहर है, जबकि श्रमिकों, उपभोक्ताओं, निवेशकों की ताकत व आमजन के बैंक में बचत के रूप में रकखे धन से ऋण लेकर ही निजी क्षेत्र अपने उद्यम चलाता है। इस पर व्यापक स्तर पर चर्चा करने की आवश्यकता है।

आज पारदर्शिता के नाम पर नागरिकों से आधार कार्ड, पेन कार्ड, और भी न जाने किन-किन दस्तावेजों के द्वारा उसे तन्त्र का गुलाम बनाने का घृणित खेल चल रहा है। आवश्यकता तन्त्र को लोगों की पहुँच व नियंत्रण में लाने की है।

पाठकों के लिए

श्रमयोग पत्र में अपने प्रिय पाठकों की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिये 'गांव घर की खबर' नाम से स्तम्भ प्रकाशित किया जाता है। आप समाज, देश, गांव, खेती, राजनीति, मानव मूल्य आदि किसी भी विषय पर अपनी बेबाक राय हमें भेजें। हमें इसे प्रकाशित करने में प्रसन्नता अनुभव करेंगे। विचार कभी भी दबाए नहीं जाने चाहिये, इन्हें शब्द रूप दें।

-सम्पादक

श्रमयोग समुदाय की सदस्यता ग्रहण करें।

साथियों श्रमयोग आपके द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से ही गतिविधियों का संचालन करता है। हम किसी भी सरकारी या गैर सरकारी संस्थान से किसी तरह की आर्थिक मदद प्राप्त नहीं करते हैं। अतः अपने अन्य साथियों को भी श्रमयोग समुदाय की सदस्यता लेने हेतु प्रेरित करें। सदस्यता शुल्क ₹0 200/- वार्षिक है। प्रत्येक सदस्य तक "श्रमयोग पत्र" डाक द्वारा निशुल्क भेजा जायेगा। सदस्यता आवेदन पत्र के लिये आप shramyogcommunity@gmail.com पर पत्र भेज सकते हैं। श्रमयोग की गतिविधियों को जानने के लिये www.shramyog.org को देखें।



गांव घर की खबर



प्रिय साथियो नमस्कार। आशा करती हूँ आप अपने घर परिवार के साथ सकुशल होंगे। साथियो कोविड-19 महामारी बड़ी तेजी से फैल रही है। रचनात्मक महिला मंच की क्लस्टर बैठकों का निर्णय लिया गया था, फिलहाल कोविड-19 महामारी के बढ़ने के कारण इसे स्थगित किया गया है। सामान्य स्थिति होने पर जल्द ही बैठकें शुरू करेंगे।

देश भर में हा-हाकार मच रही है। शहरों से लोग फिर से अपने गाँवों में लौट रहे हैं तो हमें उनकी देख भाल करनी है और

सावधान भी रहना है। महामारी के कारण सभी लोग चिन्ता में हैं। सभी साथियों से अनुरोध है अपने घर परिवार व बुजुर्गों का ध्यान रखें। मास्क पहनें व बार बार हाथ धोयें। ज्यादा भीड़ में न जायें। आवश्यक कार्य से ही बाहर निकलें।

साथियों 2020 में भी रचनात्मक महिला मंच के अध्यक्ष, कोषाध्यक्ष व सचिव का द्विवार्षिक चुनाव होने जा रहा था पर महामारी के कारण चुनाव नहीं हो पाया। इस वर्ष अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में हर क्लस्टर में बैठक व 9 मई

को जालीखान प्राथमिक विद्यालय में चुनाव का निर्णय लिया गया था परन्तु महामारी के फैलने पर फिर स्थगित करना पड़ा है।

उजाला समूह कोट जसपुर कि सदस्यों ने सामूहिक खेती करने का निर्णय लिया था। वर्षा न होने के कारण अदरक सूख गया। हमने अपने-अपने खेतों में थोड़ा-थोड़ा लगा दिया है।

निर्मला देवी,
अध्यक्ष,
रचनात्मक महिला मंच

नल लगा दिये पर पानी आता नहीं

सभी साथियों को मेरा नमस्कार। मैं प्रण स्वयं सहायता समूह ग्राम उज्जलकना से आपको पत्र लिख रही हूँ। हमारे यहाँ जंगलों में आग लगने के कारण बहुत नुकसान हो गया है। जीव, जन्तु, पक्षी, पशु आदि सभी को नुकसान हुआ है। जंगलों में आग लगने के कारण गाय, भैस, बकरी

आदि के लिए घास भी नहीं मिल रहा है। हम बहुत परेशान हो गये हैं। इस साल बारिश न होने के कारण कुछ भी नहीं हो रहा है। क्योंकि जो कुछ भी बो रखा है वो भी नहीं हो रहा है। हमारे यहाँ पानी की बहुत परेशानी है। हमें पानी के लिए दो किलोमीटर पैदल जाना पड़ता है। सरकार ने हर किसी के

घरों में नल लगा दिये हैं लेकिन हमारे गाँव में पानी एक हफ्ते के बाद आता है। वो भी आधे घंटे के लिए। जिससे हमारी पूर्ति नहीं होती है। आशा है कि आप हमारी समस्या को समझेंगे।

अनीता देवी, कोषाध्यक्ष, प्रण
स्वयं सहायता समूह

'खूब गंदा खेला होबे'

हाल ही में सल्ट में हुए विधानसभा उपचुनाव का परिणाम आ चुका है, जिसमें भाजपा प्रत्याशी व निवर्तमान विधायक स्व0 सुरेंद्र जीना के भाई महेश जीना ने 21874 मत प्राप्त कर विजय प्राप्त की। उन्होंने अपनी निकटतम प्रतिद्वन्दी कांग्रेस की गंगा पंचोली को 4697 मतों से पराजित कर यह जीत हासिल की। इस चुनाव में कुल 7 प्रत्याशी मैदान में थे। तीसरा स्थान नोटा का रहा। जिसमें 721 लोगों ने किसी को भी मत देना पसंद नहीं किया। हालांकि, यह उपचुनाव था और पूर्व से ही कयास लगाए जा रहे थे कि महेश जीना को सहानुभूति मत प्राप्त होंगे और वे जीत हासिल कर लेंगे, ऐसा ही हुआ।

हालांकि लोकतन्त्र में यह जनता जनार्दन तय करती है कि वो किसे अपना प्रतिनिधित्व सौंपती है। किन्तु इस चुनाव में जो भी धटनाएँ सुनने व देखने को मिली उससे ज्ञात होता है कि दिन प्रतिदिन हमारे राजनेताओं और राजनीति का नैतिक पतन होता जा रहा है और लोकतन्त्र खतरे के निशान को पार कर रहा है। दोनों ही राष्ट्रीय दलों के कार्यकर्ताओं, नेताओं की आपसी उठापटक और रार यह दर्शाती है कि उनकी निगाहें सिर्फ निजी हित पर टिकी है। जन भावनाएँ, क्षेत्रीय मुद्दे, जनता के हक, अधिकार, सुरक्षा, इन सबसे उनको कोई लेना-देना नहीं है। उन्हें जनता को बहला-फुसला कर उनके कन्धे पर सवार होकर सश्रारूपी मलाई का सुख प्राप्त करना है। अन्य प्रत्याशी भी जो चुनाव मैदान में थे उनके घोषणा पत्र में भी हवाई बातें ही थी जो वास्तवता से कोसों दूर थी।

यह वास्तव में शर्मनाक है कि हम सब भी स्थानीय मुद्दों की अपेक्षा राष्ट्रीय नेतृत्व की लोक लुभावन बातों में आकर अपना मतदान कर रहे हैं। राष्ट्रीय दलों ने इतने वर्षों में यह काम बखूबी कर लिया है कि उन्होंने जनता को मानसिक गुलामी में बांधकर उनकी अपनी समझ को कुन्द कर दिया है। उन्हें क्षेत्रीय उम्मीदवार की बातों की अपेक्षा अब पार्टी के शीर्ष नेतृत्व पर भरोसा अधिक है। यह लोकतंत्र की हत्या ही है। क्योंकि लोकतंत्र सत्ता के विकेन्द्रीकरण की बात करता है। अलग-

2 क्षेत्रों की विविधताओं के अनुसार उनकी आवश्यकताओं, मांगों, परिस्थितियों के अनुरूप विकास हेतु क्षेत्रीय नेतृत्व के चयन की बात करता है।

वास्तव में अब जनता को इन सबके खिलाफ अपनी समझ विकसित कर संगठित होना होगा। कब तक ये लोग हमारे भोलेपन का लाभ उठाकर निजी हित साधते रहेंगे। अब जागना ही पड़ेगा, और एकजुट होकर

कहना ही पड़ेगा कि बस अब बहुत हो चुका। इन्हें सबक सिखाकर उनके मन की बात की अपेक्षा 'पहले हमारी बात के नारे को मजबूत करना पड़ेगा। जब जनता जागरूक होकर अपनी शर्तों पर कार्य करवाना आरंभ करेगी तभी लोकतंत्र मजबूत होगा।

प्रकाश,
श्रमयोग





पहला दशक श्रमयोग के साथ मेरा सफर

अजय कुमार

दूसरी अध्ययन यात्रा ने सल्ट क्षेत्र में सामुदायिक आजीविका पर कार्य करने की आवश्यकता को पूरी तरह स्थापित कर दिया था। दूसरी अध्ययन यात्रा के परिणामों ने हमें यह भी बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय कौशल व संसाधनों पर आधारित आजीविका केसाधनों में ही सततता है और वह महिला सशक्तिकरण की दिशा में कार्य करने का एक महत्वपूर्ण जरिया भी हो सकता है। हम दूसरी अध्ययन यात्रा के परिणामों को लेकर वापस जन समुदायों के बीच गये। इन परिणामों पर खूब चर्चा हुई। तय किया गया कि स्थानीय कौशल व संसाधनों पर आधारित आजीविका के अवसरों हेतु सहयोग करने की दिशा में काम किया जाएगा। हम यह समझ रहे थे कि सदियों से चले आ रहे आजीविका संबंधित परम्परागत साधनों में अभी भी काफी संभावनाएँ हैं। हाँलाकि खेती तेजी से छूट रही थी, पशुपालन संकुचित हो रहा था फिर भी संभावनाएं नजर आ रही थी, अतः उस पर

कार्य करने का निर्णय हुआ।

इसी दौरान हमारी चर्चाओं में दो महत्वपूर्ण तथ्य निकल कर आये। पहला स्थानीय संसाधन जिनमें जल, जंगल, जमीन व जैवविविधता महत्वपूर्ण घटक हैं में निरंतर क्षय हो रहा था। अतः उनके संरक्षण व संवर्धन के लिए किये जाने वाले काम आजीविका के साधनों को मजबूत करेंगे, अतः विस्तृत चर्चाओं के बाद “प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान” के अन्तर्गत हम अपने कार्य क्षेत्र में प्राकृतिक धरोहर के संरक्षण व संवर्धन हेतु कार्य करेंगे। यहाँ प्राकृतिक संसाधन शब्द का प्रयोग न करते हुए प्राकृतिक धरोहर कहा गया, क्योंकि हम यहाँ की जल, जंगल, जमीन व जैव-विविधता को धरोहर के रूप में ही देखना चाहते थे।

दूसरा सल्ट क्षेत्र अपनी हल्दी, लखोरी मिर्च, अदरक इत्यादि कृषि उत्पादों के उत्पादन के लिए मशहूर था। धीरे-धीरे छूटती खेती में इन फसलों का उत्पादन भी कम होता चला गया। रचनात्मक महिला मंच की बैठकों में निरंतर चर्चाओं के बाद यह तथ्य निकल

कर आया कि अन्य तमाम कारणों के अतिरिक्त कृषि उत्पादों का उचित मूल्य न मिलना भी खेती के छूटने का बड़ा कारण है। छोटी जोतों में कम मात्रा में उत्पादन होता है अतः उसे मण्डी तक लेकर जाना आर्थिक दृष्टि से संभव नहीं होता, बिचोलिये गाँव में आते हैं व औने-पौने दामों में हल्दी, मिर्च व अदरक खरीद कर ले जाते हैं। मंच का कहना था कि यदि श्रमयोग हमारे उत्पादों को बाजार दिलाने में सहयोग करे तो हम महिलाएं कृषि पर पुनः ध्यान देना प्रारंभ कर सकती हैं। लम्बी चर्चाओं के बाद तय किया गया कि प्रारम्भ में महिलाएं अपने कृषि उत्पाद हल्दी को अपने समूहों में एकत्र करेंगी व मंच के माध्यम से उसे बाजार में बेचा जायेगा। बेचने में सहयोग करने की पूरी जिम्मेदारी श्रमयोग की होगी। सफलता मिलने पर भविष्य में अन्य फसलों को भी इसमें शामिल किया जायेगा। रचनात्मक महिला मंच ने इस कार्य को करने के लिए अपने उपक्रम की स्थापना कि जिसे नाम दिया गया “श्रम उत्पाद”। दूसरी अध्ययन यात्रा ने

“प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान” व “श्रम उत्पाद” तक पहुंचने के लिए हमें रास्ता दिखाया।

अब हमारे पास “श्रम-जन स्वराज अभियान” व “प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान” के रूप में दो सशक्त अभियान थे जो पूरी तरह आम जन की जरूरतों से निकल कर आये थे। श्रम-जन स्वराज अभियान के अन्तर्गत समुदाय आधारित संगठनों का निर्माण, उनका क्षमता वर्धन, पंचायती राज के सशक्तिकरण हेतु कार्य, आजीविका गतिविधियों में सहयोग, नीतिगत बदलाओं हेतु कार्य होना तय हुआ, तो प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान के तहत स्थानीय जल-जंगल जमीन-जैवविविधता के संरक्षण व संवर्धन, अपनी धरोहर के प्रति स्थानीय समुदायों में लगाव, नीतिगत बदलावों के लिए काम इस अभियान के महत्वपूर्ण घटक तय किये गये। यह भी तय किया गया कि प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान को हम गाँव-गाँव में बच्चों के बीच लेकर जायेंगे।

शनै-शनै हम दोनों अभियानों को लेकर गाँवों में महिलाओं व बच्चों के बीच जाने लगे, इसी बीच रचनात्मक महिला मंच की जुलाय माह की त्रैमासिक बैठक में यह बात निकल कर आयी कि हम इस वर्ष भी महोत्सव मनाएंगे। महिलाओं का कहना था कि 15 अक्टूबर का दिन महत्वपूर्ण होते हुए भी महोत्सव के आयोजन के लिए उचित नहीं है क्योंकि उन दिनों (असोज का महिने में) खेती, घास काटना इत्यादि का बहुत काम होता है। खेती थोड़ा बहुत जो बची है वह खरीफ की ही है। अतः खेती व घास का काम निपटने के बाद महोत्सव नवम्बर माह के अन्त में करेंगे। चर्चाओं के बाद तय किया गया कि मंच हर वर्ष नवम्बर माह के अन्तिम रविवार को महोत्सव का आयोजन करेगा। रामगंगा नदी के किनारे बसे गाँव मंटवास की महिलाओं के समूह के आग्रह पर इस वर्ष “द्वितीय सल्ट महिला महोत्सव” 29 नवम्बर 2015 को मंटवास गाँव में करने का निर्णय लिया गया।

क्रमशः

डॉ० अम्बेडकर के विचारों को समझने के लिये एक जरूरी पुस्तक “जाति का विनाश”

भारत रत्न बाबा साहेब डॉ० अम्बेडकर की विश्व-प्रसिद्ध पुस्तक ‘एनिहिलेशन आफ कास्ट’ का हिन्दी अनुवाद “जाति का विनाश” कई मायनों में महत्वपूर्ण है। यह पुस्तक मुख्यतः बाबा साहेब के उस प्रसिद्ध भाषण पर केन्द्रित है, जो उन्होंने सन् 1936 में ‘जात-पात तोड़क’ मण्डल द्वारा लाहौर के प्रस्तावित वार्षिक अधिवेशन में अध्यक्ष के रूप में बोलने के लिए लिखा था। परन्तु यह भाषण वह इसलिए नहीं दे पाए क्योंकि जात-पात तोड़क मंडल के आयोजकों को इसके कुछ अंशों पर आपत्ति थी। इस कारण यह कार्यक्रम अनिश्चित समय के लिए टाल दिया गया। यद्यपि कार्यक्रम के आयोजक इस प्रस्तावित भाषण की विषय वस्तु और प्रतिपादन से बहुत प्रभावित थे, किन्तु उन्हें हिन्दू धर्म के मामलों पर की गयी उनकी कुछ टिप्पणियों पर आपत्ति थी जिसे डॉ० अम्बेडकर ने अपने लिखित भाषण से हटाने के अनुरोध को स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार इस महत्वपूर्ण वक्तव्य को लेकर जात-पात तोड़क मंडल में ऊहा-पोह की स्थिति उत्पन्न हो गयी तथा इस अधिवेशन को ही रद्द कर दिया गया।

प्रस्तावित लाहौर अधिवेशन के इस भाषण को डॉ० अम्बेडकर ने अपने खर्च पर मई 1936 में एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कराया जिसकी चर्चा गांधी जी ने अपने पत्र ‘हरिजन’ में की तथा लिखा- “कोई सुधारक इस व्याख्यान की उपेक्षा नहीं कर सकता। जो रूढ़िवादी हैं, वे इसे पढ़ कर लाभान्वित होंगे। इसका मतलब यह नहीं है कि व्याख्यान में आपत्ति करने लायक कुछ भी नहीं है। इसे सिर्फ इसलिए पढ़ना चाहिए कि इस पर गंभीर आपत्ति की जा सकती है। डॉ० अम्बेडकर हिन्दुत्व के लिए एक चुनौती हैं।” इसके जवाब में डॉ० अम्बेडकर ने गांधी जी को एक लम्बा

जवाब लिखा जिसमें उन्होंने कहा कि गांधीजी के विचार पूर्णतः तर्क विरुद्ध हैं व निष्कर्ष तौर पर उन्होंने लिखा- “मेरी राय में हिन्दू समाज को एक नैतिक पुनरुत्थान की जरूरत है जिसे स्थगित रखना खतरनाक है।”

पुस्तक के आरम्भ में अम्बेडकर द्वारा लिखी गयी भूमिका का अनुवाद दिया गया है जिसे उन्होंने क्रमशः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय संस्करण के लिए लिखा था। इस भूमिका के जरिए यह बखूबी समझा जा सकता है कि बाबा साहेब हिन्दू धर्म की बुराइयों को चिन्हित कर उसे दूर करने के बारे में कितने सजग तथा अपने विचारों में कितने अडिग थे। द्वितीय संस्करण की भूमिका में वे लिखते हैं, “दुनिया उन विद्रोहियों की बहुत ऋणी है जो पुरोहितों के सामने उनसे बहस करते हैं और दावा करते हैं कि इस वर्ग से भी गलती हो सकती है। प्रत्येक प्रगतिशील समाज अपने विद्रोहियों को जो सम्मान देता है, मुझे उसका लालच नहीं है, अगर मैं हिन्दुओं को महसूस करा पाता हूँ कि वे भारत के बीमार लोग हैं और उनकी बीमारी अन्य भारतीयों के स्वास्थ्य और खुशी के लिए खतरा पैदा कर रही है, मेरी संतुष्टि के लिए इतना काफी है।”

इस प्रकार के सूत्र-वाक्य पुस्तक में भरे पड़े हैं जिनसे भारतीय समाज की आँखें खुल जानी चाहिए। पुस्तक की शुरुआत में ही डॉ० अम्बेडकर ने उन परिस्थितियों एवं कारणों का भी उल्लेख किया है जिसके कारण यह भाषण नहीं दिया जा सका। इस ब्योरे वार घटनाक्रम को ही पढ़कर यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दू समाज में रूढ़िवादिता ने इसके विरुद्ध कोई तर्कसंगत बात सुनने, समझने तथा मानने तक की हिम्मत और इजाजत तक नहीं दे रखी है। इस पुस्तक में हिन्दू धर्म शास्त्रों के उद्धरणों के माध्यम से

तर्कपूर्ण ढंग से यह सिद्ध किया गया है कि हिन्दू जाति-पाति का विनाश असंभव है। चूँकि तथाकथित हिन्दू सुधारवादी इन धर्मग्रन्थों को भी रखना चाहते हैं तथा सामाजिक सुधार भी करना चाहते हैं इसलिए हिन्दू धर्म में समाज सुधार की कोई गुंजाइश नहीं बचती है। डॉ० अम्बेडकर के वे विचार भी महत्वपूर्ण हैं, जिसमें उन्होंने कहा है कि बिना सामाजिक और धार्मिक क्रांति के राजनैतिक क्रांति नहीं हो सकती है। इस बारे में उन्होंने आयरलैंड, रोम एवं अमेरिका का उदाहरण देते हुए कम्पूनल अवार्ड का भी जिक्र किया है। पुस्तक में जातिगत अत्याचार की घटनाओं के उदाहरण द्वारा इसका ब्योरा देकर जाति के दंश को चिन्हित किया गया है। पुस्तक में आर्थिक सुधार के लिए सामाजिक सुधार की आवश्यकता को भी सतर्क ढंग से रखा गया है। आगे डॉ० अम्बेडकर कहते हैं, “जाति चूँकि मनुष्य की नैसर्गिक क्षमताओं और रूढ़ानों को सामाजिक नियमों की अनिवार्यता के अधीन कर देती है, इसलिये यह एक हानिकारक संस्था है।”

पुस्तक के अन्तिम अंश में डॉ० अम्बेडकर द्वारा कोलम्बिया विश्व विद्यालय में सन् 1916 में मानव विज्ञान सेमिनार में प्रस्तुत शोध आलेख “कास्ट इन इण्डिया दे यर मे के निज्म, जे ने सिस एण्ड डेवलेपमेन्ट” का हिन्दी अनुवाद भी शामिल किया गया है जो पूर्व के संस्करणों में नहीं हो पाया था तथा डॉ० अम्बेडकर खुद चाहते थे कि इस आलेख को ‘एनिहिलेशन ऑफ कास्ट’ पुस्तक में शामिल किया जाता लेकिन समय की कमी के कारण वे ऐसा नहीं कर पाये थे।

इस पुस्तक का अनुवाद मशहूर लेखक व पत्रकार राजकिशोर जी ने किया है। फारवर्ड प्रेस से साभार

आग का तांडव

विक्रम, श्रमयोग

आग के उपयोग की खोज को मनुष्य का सबसे बड़ा आविष्कार माना जाता है। आग के उपयोग की खोज के बाद मनुष्य का जीवन आसान होता चला गया। परन्तु आग जब तक नियन्त्रित है तब तक मनुष्य के लिए उपयोगी है, अनियन्त्रित होते ही यह मनुष्य के साथ-साथ जीव जन्तु, पेड़-पौधे, पर्यावरण सभी के लिए अभिशाप बन जाती है। जब आग जंगलों में तांडव करती है तो उसके आगे जो आता है उसे जलाते हुए आगे निकल जाती है उसे रोक पाना असंभव सा हो जाता है।

उत्तराखण्ड के जंगलों में आग की घटनाओं को लेकर भूवैज्ञानिक और पर्यावरणविद की जो आशंकाएँ जता रहे थे वह सच साबित हो रही हैं। अप्रैल की शुरुआत में ही राज्य के जंगलों की आग नियंत्रण से बाहर हो चुकी है। उत्तराखण्ड वानिकी और औद्योगिकी यूनिवर्सिटी के पर्यावरण विभाग के अध्यक्ष डॉ० एस० पी० सती के अनुसार अभी तो शुरुआत है। आग की इन घटनाओं को देखते हुए आशंका है कि इस बार 2016 से ज्यादा बुरी स्थिति हो सकती है यदि पुख्ता व्यवस्था नहीं की गई तो, मौनसून आने तक 10 प्रतिशत से अधिक जंगल आग की चपेट में आ सकते हैं। 2016 की बाद पहली बार आग कॉर्बेट नेशनल पार्क तक पहुँच गई है। वन विभाग की रिपोर्ट के अनुसार 1 अक्टूबर 2020 से 4 अप्रैल 2021 तक उत्तराखण्ड के जंगलों में आग लगने की 989 घटनाएँ हो चुकी हैं इसमें 1297.43 हेक्टेयर जंगल जल चुके हैं। आग से सबसे अधिक नुकसान पौड़ी में हुआ है। यहाँ 92 घटनाओं में 217.4 हेक्टेयर जंगल जल चुके हैं। ग्रामीण इलाके जंगलों के आस पास बसे हुए हैं अतः इस अनियन्त्रित आग की वजह से वहाँ रह रहे ग्रामीणों को जान माल का नुकसान उठाना पड़ रहा है।

गिगड़े, सल्ट ब्लॉक (जिला-अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड) का एक छोटा सा गाँव है यहाँ के ज्यारत पुरुष काम के लिए शहरों में चले गये हैं। पिछले दिनों यहाँ जंगल में आग लगी और यह आग खेतों तक पहुँचने लगी जहाँ ग्रामीणों ने पशुओं के चारे के लिये सूखे घास के ढेर तथा जलावन के लकड़ी रखी हुई थी। इस

बात की सूचना जैसे ही महिलाओं को मिली सभी महिलाएँ आग बुझाने के लिए दौड़ पड़ी। यहाँ महिलाओं ने अपने स्वयं सहायता समूह बनाये हैं। सभी महिलाएँ इसकी सदस्यएँ हैं। सभी महिलाओं ने पेड़ों के पत्तों से आग बुझाने का पुरजोर प्रयास किया। यह मंजर भयावह था। बहुत बड़ी-बड़ी लपटें आ रही थीं और महिलाएँ अपनी जान पर खेल कर आग को बुझाने पर लगी हुई थीं। 2-3 घण्टे की मसकत के बाद आग पर काबू पा लिया गया। सभी महिलाएँ बहुत थक गयी थीं। शुक्र है कि कोई बड़ी घटना नहीं घटी क्योंकि महिलाओं के पास आग बुझाने के ना तो औजार थे ना ही कोई ट्रेनिंग।

अब उनके अन्दर यह भय था कि कहीं दोबारा आग लग गई तो! सभी महिलाओं ने निर्णय लिया कि सभी घास के ढेरों को घर तक पहुँचाया जाए। सभी महिलाओं ने बारी-बारी से एक दूसरे के घास के गट्टे मिलकर घर तक पहुँचाये। खेतों में जलावन के लिए लकड़ियाँ भी रखी हुई थीं वह भी घर पहुँचायीं। महिलाओं का कहना था कि अगर घास जल जाता तो जानवरों को क्या खिलाते। इस आग के कारण जानवरों के लिए चारे का संकट आ गया है। ग्रामीणों का कहना है कि बड़े जानवरों के लिये तो थोड़ा बहुत चारा पेड़ों से निकाला जा सकता है परन्तु बकरियों के लिए तो चारा ? बकरी पालाकों का कहना है कि अब बकरियों के लिये चारे की व्यवस्था कैसे करे यह संकट सबसे बड़ा है।

उत्तराखण्ड में आए दिन अखबारों में आग के तांडव की खबरे आती हैं। कहीं मवेशी जल गये हैं तो कहीं ग्रामीणों के घर। पर सरकार को कोई फर्क नहीं पडता। कभी कभी लगता है कि सरकार को ग्रामीणों के जीवन से कोई सरोकार नहीं है। हर साल आग का तांडव होता है। यह सभी को पता है कि आग लग सकती है तो इसका इंतजाम क्यों नहीं किया जाता। इस आग को लेकर चुनावी रैलियों में कोई बात नहीं है। सल्ट में तो अभी उप चुनाव चल ही रहे थे और चारों ओर आग ही आग थी तो भी हमारे नेताओं को यह मुद्दा जरूरी नहीं लगा। आखिर इस सब का जिम्मेदार कौन है ?

नमक (प्रथम भाग)

रजिया सज्जाद जहीर

उन सिख बीबी को देखकर सफ़िया हैरान रह गई थी, किस कदर वह उसकी मां से मिलती थी। वहीं भारी भरकम जिस्म, छोटी-छोटी चमकदार आँखें, जिनमें नेकी, मुहब्बत और रहमदिली की रोशनी जगमगाया करती थी। चेहरा जैसे कोई खुली हुई किताब। वैसा ही सफ़ेद बारीक मलमल का दुपट्टा जैसा उसकी अम्मा मुहर्रम में ओढ़ा करती थीं।

जब सफ़िया ने कई बार उनकी तरफ मुहब्बत से देखा तो उन्होंने भी उसके बारे में घर की बहू से पूछा। उन्हें बताया गया कि ये मुसलमान है। कल सुबह ही लाहौर जा रही हैं। अपने भाइयों से मिलने, जिन्हें इन्होंने कई साल से नहीं देखा। लाहौर का नाम सुनकर वे उठकर सफ़िया के पास आ बैठीं और उसे बताने लगीं कि उनका लाहौर कितना प्यारा शहर है। वहाँ के लोग कितने खूबसूरत होते हैं, उम्दा खाने और नफीस कपड़ों के शौकीन, सैर-सपाटे के रसिया, जिंदादिली की तस्वीर।

कीर्तन होता रहा। वे आहिस्ता-आहिस्ता बातें करती रहीं। सफ़िया ने एक-दो बार बीच में पूछा भी, “माताजी, आपको यहां आए बहुत साल हो गए होंगे।”

“हां बेटा! जब हिंदुस्तान बना था तभी आए थे। वैसे तो यहां भी अब हमारी कोठी बन गई है। बिजनेस है, सब ठीक ही है, पर लाहौर बहुत याद आता है। हमारा वतन तो जी लाहौर ही है।”

फिर पलकों से कुछ सितारे टूटकर दूधिया आंचल में समा जाते हैं। बात आगे चल पड़ती, मगर घूम-फिरकर फिर उसी जगह पर आ जाती -‘साडा लाहौर’!

कीर्तन कोई ग्यारह बजे खत्म हुआ। जब वे प्रसाद हाथ में लिए उठने लगीं और सफ़िया के सलाम के जवाब में दुआएं देती हुई रूखसत होने लगीं तब सफ़िया ने धीमे से पूछा, “आप लाहौर से कोई सौगात माँगना चाहें तो मुझे हुक्म दीजिए।”

वे दरवाजे से लगी खड़ी थीं। हिचकिचाकर बहुत की आहिस्ता से बोली, “अगर ला सको तो थोड़ा-सा लाहौरी नमक लाना।”

पंद्रह दिन यों गुज़रे कि पता ही नहीं चला। जिमखाना की शामें, दोस्तों की मुहब्बत, भाइयों की खातिरदारियां-उनका बस न चलता था कि बिछुड़ी हुई परदेसी बहिन के लिए क्या कुछ न कर दें। दोस्तों, अजीजों की यह हालत कि कोई कुछ लिए आ रहा हैं, कोई कुछ। कहाँ रखें, कैसे पैक करें, क्यों कर ले जाएँ-एक समस्या थी। सबसे बड़ी समस्या थी बादामी कागज की एक पुड़िया की जिसमें कोई सेर भर लाहौरी नमक था।

सफ़िया का भाई एक बहुत बड़ा पुलिस अफसर था। उसने सोचा कि वह ठीक राय दे सकेगा। चुपके से पूछा “क्यों भैया, नमक ले सकते हैं?”

वह हैरान होकर बोला, “नमक? नमक तो नहीं ले जा सकते, गैरकानूनी है। और.....और नमक का आप क्या करेंगे? आप लोगों के हिस्से में तो हमसे बहुत ज्यादा नमक आया है।”

वह झुंझला गई, “मैं हिस्से-बखरे

की बात नहीं कर रही हूँ, आया होगा। मुझे तो लाहौर का नमक चाहिए, मेरी माँ ने यही मँगवाया है।”

भाई की समझ में कुछ नहीं आया। मां का क्यों ज़िज़्र था, वे तो बंटवारे से पहले ही मर चुकी थीं।

जरा नरमी से समझाने के अंदाज में बोला, “देखिए बाजी! आपको कस्टम से गुजरना है और अगर एक भी चीज़ ऐसी वैसी निकल आई तो आपके सामान की जिंदी-जिंदी बिखेर देंगे कस्टमवाले। कानून जो.....”

वह बिगड़कर बोली, “निकल कर आने का क्या मतलब, मैं क्या चोरी से ले जाऊँगी? छिपा के ले जाऊँगी? मैं तो दिखा के, जता के ले जाऊँगी?”

“भाई, यह तो आप बहुत ही गलत बात करेंगे।...कानून.....।”

“अरे, फिर वही कानून-कानून कहे जाते हो! क्या सब कानून हुकुमत के ही होते हैं, कुछ मुहब्बत, मुरौवत,”

अंजलि शर्मा

वरिष्ठ सहायक, ग्राम्य विकास विभाग, बदायूँ

शाम को शुचि ने कॉलेज से आकर देखा तो बहुत खुश हुई..... “अम्मा!! कितनी प्यारी लग रही हो आप!! लेकिन आपने बिंदी नहीं लगाई... अरे!! वही तो सबसे ज्यादा सूट करती है आपको” कहते हुए उसने बिंदी माथे पर चिपका दी और ड्रेसिंग टेबल के सामने घसीटते हुए ने जाकर खड़ा कर दिया, और कहने लगी, “अब देखो खुद को...। माँ !! आप अभी भी अच्छे-अच्छे की छुट्टी कर सकती हो।” “पागल हो गयी गई है... कुछ भी बोलती है, अब मैंने बिंदी लगाना छोड़ दिया है.....।”

“क्यों..? खाना खाना छोड़ा... पानी छोड़ा... साँस लेना छोड़ा... नहीं ना, जिम्मेदारियों को छोड़ा... वह भी नहीं तो फिर बिंदी क्यों...? बिंदी मतलब बिंदु...शून्य.... जहाँ से आप प्रारंभ करती हो फिर से फिर कुछ नया...। वही सब तो कर रही हो आप!! जिंदगी को फिर से जीने की कवायद, दुबारा से दुनिया के साथ तालमेल बिटाने की कोशिश, अपने ही परिवार के साथ फिर से जीने के नए तरीके सीखना...यही सब तो कर रही हो आप!! ये बिंदी तो आपके आत्मविश्वास को बढ़ाती है। अब से यह रोज लगाओगी माँ। मुझे पता है श्रृंगार के नाम पर आपको सबसे ज्यादा बिंदी ही पसंद थी”....कहते हुए शुचि की भीगी आँखों में एक चमक सी आ गई थी।

अगले दिन सुनंदा फिर से तैयार हुई, हल्के आसमानी रंग की चिकन की साड़ी और माथे पर काँपते हुए हाथों से उसने रोली की मैरून बिंदी लगाई। अपने तय किये हुए स्थान पर बैठ कर पार्क में सबको देखती रही, फिर हल्के से उठकर टहलने लगीं.... तभी अचानक से कल वाला युवक उनके सामने आ गया.....।

“गुड इवनिंग मैम!! आज तो आप बहुत प्यारी लग रही हैं। कितना करीने से साड़ी बांधती हैं आप...? एक-एक भांज ऐसी लग रही है जैसे अभी-अभी

“हाँ, वे मशीन तो नहीं होते, पर मैं आपको यकीन दिलाता हूँ वे शायर भी नहीं होते। उनको तो अपनी ड्यूटी करनी होती है।”

“अरे बाबा, तो मैं कब कह रही हूँ कि वह ड्यूटी न करें। एक तोहफा है वह भी चंद पैसों का, शौक से देख लें, कोई सोना-चाँदी नहीं, स्मगल की हुई चीज़ नहीं, ब्लैक मार्केट का माल नहीं।”

“अब आपसे कौन बहस करें। आप अदीब ठहरें और सभी अदीबों का दिमाग थोड़ा-सा तो जरूर ही घुमा हुआ होता है। वैसे मैं आपको बताए देता हूँ कि आप ले नहीं जा पाएँगी और बदनामी मुफ्त में हम सबकी भी होगी। आखिर आप कस्टमवालों को कितना जानती हैं?”

उसने गुस्से से जबाब दिया, “कस्टमवालों को जानें या न जानें, पर हम इंसानों को थोड़ा-सा जरूर जानते हैं। और रही दिमाग की बात सो अगर

सभी लोगों का दिमाग हम अदीबों की तरह घूमा हुआ होता तो यह दुनिया कुछ बेहतर ही जगह हो जाती है, भैया।”

मारे गुस्से के उसकी आँखों से आँसू बहने लगे थे। उसका भाई सिर हिलाकर चुप हो गया। अगले रोज दो बजे दिन को उसे रवाना होना था। सुबह के लिए बहुत व्यस्त कार्यक्रम बन चुका था, इसलिए उसे सारी पैकिंग रात को ही करनी थी।

कमरे का दरवाजा अंदर से बंद करके वह समान बाँधने लगी। इधर-उधर फैली हुई धीरे-धीरे सिमटकर सूटकेस और बिस्तबंद में चली गई। सिर्फ दो चीज़ें रह गई। एक तो वह छोटी-सी टोकरी जिसमें कीनू थे, एक दोस्त का तोहफा-संतरे माल्टे को मिलाकर पैदा किया गया फल, माल्टे की तरह रंगीन और मीठा, संतरे की तरह नाजुक। और दुसरी थी वह नमक की पुड़िया।

अब तक सफ़िया का गुस्सा उतर

छुअन (पिछले भाग से आगे)

शोरूम से सेट होकर आई है। अब साड़ियों में कम ही दिखती हैं, और इतनी सालीकेदार... मुश्किल से...शायद मैं ज्यादा ही कह गया सॉरी...मैं अभिषेक इसी कॉलेज में रहता हूँ...पॉकेट-3, फ्लैट न0 41, इंटर कॉलेज में लेकर हूँ... और आप...??”

स्कुचाते हुए सुनंदा ने कहा, “जी मैं सुनंदा बंसलमैं भी यहीं इसी कॉलोनी में रहती हूँ, पॉकेट-2, फ्लैट न0 39।

“अरे वाह!!! तब तो आप हमारे पीछे वाली लेन में ही रहती हैं। ताज्जुब है पहले कभी मुलाकात नहीं हुई आपसे” अभिषेक ने कहा।

“नहीं!! मैं तो अभी 7-8 महीने पहले ही आई हूँ, यहाँ अपनी बेटा शुचिता के पास” सुनंदा ने कहा। “आप टिचर हैं क्या..?” अभिषेक ने कहा।

“नहीं-नहीं मैं नहीं मेरी बेटा लेक्चरर है यहाँ इंजीनियरिंग कॉलेज में” सुनंदा ने बताया।

“आपको देखकर लगता ही नहीं है कि आपकी बेटा इतनी बड़ी भी है” अभिषेक ने तारीफ के लहजे में कहा।

“मेरा बड़ा बेटा अमेरिका में है, शुचिता उससे छोटी है” शरमाते हुए सुनंदा ने कहा।

“दैट्स गुड, वैरी स्मार्ट” अब चलता हूँ कल फिर मुलाकात होगी, नमस्कार कर अभिषेक चला गया।

सुनंदा रास्ते भर सोचती रही की यह युवक इतनी दिलचस्पी क्यों ले रहा है उसमें..? इतना तारीफ तो पूरी जिंदगी में बंसल साहब ने कभी नहीं की। तारीफ-तारीफ जैसा शब्द तो उसने सुना ही नहीं था कभी उनकी जुबान से। हर समय जाहिल, फूहड़ और न जाने कितनी उपाधियों से विभूषित करते रहते थे। घर आकर जब सुनंदा ने शुचिता को उस युवक के विषय में बताया तो उसने कोई ध्यान नहीं दिया और कहा, “मम्मा!! सब चलता है। ये बात इतनी खास भी नहीं है जिसके लिए इतना सोचा जाए”। पर वह अपने मन की कैसे कहे कि उसके लिए तो ये बहुत खास था बिलकुल नया

अनुभव इससे पहले उन्होंने ऐसा सुना ही नहीं था। पूरी रात उनकी आँखों में ही निकल गई थी। सुबह उठते तो सिर भारी था। शुचि ने उन्हें देखकर चिंतित स्वर में पूछा, माँ!!

तबियत तो ठीक है आपकी, आइये मैं आपका ब्लड प्रेशर चेक करती हूँ।

“मुझे कुछ नहीं हुआ है मैं ठीक हूँ बस थोड़ा सिर दर्द है, चाय पीकर वह भी ठीक हो जाएगा” कहकर मुस्कुराती हुई दैनिक कार्यों में लग गई। इसी तरह वक्त गुजर रहा था। बेटा आनंद अमेरिका में अपनी फैमिली के साथ सैटल था। वह अपने पिता के निधन की सुनकर अकेले ही आया था और एक सप्ताह में ही सारे कार्मकांड निपटा कर वापस चला गया था क्योंकि उसे ज्यादा छुट्टी नहीं मिल सकती थी। वह अपने हिस्से की सारी जिम्मेदारी शुचि के ऊपर डाल कर चला गया था और बेचारी शुचि एक माँ की तरह उसकी देखभाल कर रही थी। हर छुट्टी में माँ को साथ लेकर कभी मूवी तो कभी शॉपिंग जाती फिर वापसी में वहीं से दोनों खाना खाकर आते। सुनंदा को अब चिंता होने लगी थी कि शुचि का सारा समय उसी के इर्द-गिर्द घूम रहा है। उस बेचारी के लिए अपनी कोई चाहत ही नहीं रह गई है। शाम को शुचि के बालों में तेल लगाते हुए सुनंदा ने कहा, “शुचि! बेटा अब तू भी शादी कर ले, है कोई पसंद तुझे तो बता।”

“नहीं मुझे नहीं करनी है शादी” शुचि ने कहा।

“क्यों?? क्या बुराई है शादी में?” सुनंदा ने पूछा?

“आप क्या समझती हो? मैं अभी तक बच्ची हूँ। कभी पापा ने आपको वो प्यार-सम्मान दिया जिसकी आप हकदार थीं। शादी-ब्याह सब बकवास है। आप जिंदगी भर उन्हीं के हिसाब से चलीं, उनकी पसंद का पहनना-खाना, वो कहेँ हँसो तो हँस दीं कहीं ले जाएँ तो चली गईं वरना गुलामों की तरह हाथ बांधकर खड़े रहो। मुझसे तो इतना बर्दाशत होगा नहीं समझ लो आप” शुचि ने गुस्से से कहा।

“कौन तेरे दिमाग में ये उल्टी-सीधी

चुका था। भावना के स्थान पर बुद्धि धीरे-धीरे उस पर हवी हो रही थी। नमक की पुड़िया ले जानी है, पर कैसे? अच्छा, अगर इसे हाथ में ले लें और कस्टमवालों के सामने सबसे पहले इसी को रख दें? लेकिन अगर कस्टमवालों ने न जाने दिया! तो मजबूरी है, छोड़ देंगे। लेकिन फिर उस वायदे का क्या होगा जो हमने अपनी माँ से किया था? हम अपने को सैयद कहते हैं। फिर वायदा करके झुठलाने के क्या मायने? जान देकर भी वायदा पूरा करना होगा। मगर कैसे? अच्छा, अगर इसे कीनूओं की टोकरी में सबसे नीचे रख लिया जाए तो इतने कीनूओं के ढेर में भला कौन इसे देखेगा? और अगर देख लिया? नहीं जी, फलों की टोकरीयाँ तो आते वक्त भी किसी की नहीं देखी जा रही थीं। उधर से केले, इधर से किनू सब ही ला रहे थे,। यही ठीक है, फिर देखा जाएगा।

क्रमशः

बातें भरता रहता है, किसने कहा कि मैंने अपनी पसंद का कभी खाया-पिया नहीं, अपनी पसंद का पहना नहीं?” सुनंदा थोड़ी नीची निगाह करके थोड़ा घबरा कर बोलीं।

“और लीजिए, मिलिये सुनंदा से, कॉटन साड़ी किसे पसंद थी? चिकन, कंधा, कोटा, डोरीया, पोचमपल्ली, साउथ कॉटन, चंदेरी की बजाए हर जगह प्रिंटेड सिंथेटिक साड़ियाँ पहन कर किसने जिंदगी काट दी? मूवी, थियेटर और म्यूजिक की जगह घरेलू कलह जिनमें शराब पीकर अक्सर भद्दी गालियाँ दी जाती थीं, वह कौन सुनता था? बेवजह शक, ताने-उलाहने यह सब कौन सहता था भई?” शुचि बोलती जा रही थी और सुनंदा की आँखों से टप-टप करती आँसुओं की बूंदें गिर रही थीं।

“आपको क्या लगा मैं अनजान हूँ? बोलती ही तो नहीं थी, क्योंकि उस समय हिम्मत नहीं थी, पर समझती सब थी। मुझमें आप जितना धैर्य और सहनशीलता नहीं है माँ। मैं तो अपने मन की हूँ। मैं ऐसे व्यक्ति के साथ बिल्कुल भी नहीं रह सकती जो मुझ पर विश्वास न करे, जिसमें प्यार की भावना न हो, संवेदनशीलता न हो। इसलिए हे माते, अब शादी वाला अपना लेकर बंद करो और खुशी-खुशी खुद भी जिओ और मुझे भी जीने दो।” शुचि ने चिढ़ कर कहा।

शुचि की बात को बीच में ही काटकर सुनंदा ने कहा, “लेकिन बेटा अकेले जीवन काटना बड़ा मुश्किल होता है, कोई सहारा तो होना चाहिए। अभी अच्छी तरह से सोच ले, सोचने का तुझ पर अभी समय भी है, फिर पछतावा ही रह जाता है।” सुनंदा ने समझाते हुए कहा।

“कल का कल देखा जाएगा, अभी तो कॉलेज जाना है, अब आप भी सो जाओ माँ, लव यू गुड नाईट” कहते हुए शुचि अपने कमरे में चली गई।

अगले दिन माँ-बेटी दोनों में अबोलापन छाया रहा, पर दोनों ही अपनी जिम्मेदारियों को उसी तरह निभा रही थीं।

क्रमशः

हमारा स्वास्थ्य

कोरोना-दूसरी लहर

(भाग 1)

डा० वन्दना, बेंगलुरु

देशभर में पिछले एक साल से कोरोना का कहर थमने का नाम नहीं ले रहा, दिन प्रतिदिन कोरोना संक्रमितों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। पिछले साल के मुकाबले इस बार इसकी रफ्तार चार गुना तेज है। वहीं इसकी दूसरी लहर बच्चों के लिए भी घातक सिद्ध हो रही है जो पिछले साल नहीं थी। हम न्यूज के माध्यम से जान पा रहे हैं कि यह देशभर में कितनी तेजी से फैल रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार अगले कुछ महीने इसका संक्रमण ऐसे ही तेजी से होने वाला है। शायद जुलाई के बाद इससे कुछ आराम मिले। पहली लहर की तुलना में इस बार कोरोना वायरस बेहद ताकतवर बनकर सामने आया है। इस बार कई नए लक्षण भी देखने को मिल रहे हैं।

लक्षण- कोरोना की दूसरी लहर में सबसे ज्यादा लक्षणों ने ही डराया है। पिछली बार की तुलना में सब कुछ बदला है। कई लक्षण ऐसे देखने में आ रहे हैं जिन्हें कि आम आदमी बेहद सामान्य मानता है और नजर अंदाज कर देता है। पहली लहर में कुछ गिने-चुने लक्षण थे जैसे सर्दी-खांसी, बदन दर्द तो इसे मरीज स्वयं पहचान पा रहे थे कि उन्हें कोरोना की संभावना है या हो गया है। लेकिन दूसरी लहर में कई ऐसे लक्षण देखे जा रहे हैं जो पहले थे ही नहीं और इस वजह से लक्षणों के आधार पर तय कर पाना कि कोरोना है या नहीं बहुत मुश्किल हो रहा है। तो आइए देखते हैं कि यह नए लक्षण क्या हैं। इनको समय पर पहचान कर सावधान हो सकते हैं और सही उपचार ले सकते हैं। वैसे तो जांच के बिना यह कह पाना कि किसी को कोरोना है या नहीं बहुत मुश्किल है। कोरोना की दूसरी लहर में कुछ नए लक्षण ऐसे देखने में आ रहे

हैं। जो पहले भी लोगों में दिख तो रहे थे। लेकिन असामान्य थे। पर इस बार अब ये लक्षण बेहद सामान्य हो चुके हैं जैसे पेट दर्द, बैचैनी या पेट खराब होना। गर्मियों के मौसम में बैचैनी घबराहट आदि को बहुत सामान्य माना जाता है तो इस वजह से लोग इस परेशानी को नजरअंदाज कर देते हैं लेकिन कई सारे लोगों में यह देखा गया है कि इस लक्षण के बाद वह कोरोना पॉजिटिव आए हैं। पेट दर्द और दस्त की शिकायत भी देखी जा रही है। इसलिए अगर 2 या 3 दिन तक या उससे अधिक यह समस्या बनी रहती है तो उसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। मांस पेशियों में दर्द एवं बेहद कमजोरी महसूस होना। कमजोरी भी कोरोना के लक्षणों में शामिल है। कई सारे लोगों को आलस्य महसूस हो रहा है। शरीर में ऊर्जा नहीं है। ज्यादा दूर चलने पर थकान महसूस हो रही है, सांस फूल रही है शरीर में दर्द महसूस हो रहा है, ऐसे में भी तुरंत कोरोना की जांच करना जरूरी है। भूख न लगना और मानसिक सेहत पर असर। जहां यह पहले पोस्ट लक्षणों में यह देखा जा रहा था कि कोविड होने के बाद मरीज को मानसिक रूप से स्वस्थ महसूस नहीं हो रहा था, अब यह पोस्ट लक्षण मुख्य लक्षणों की श्रेणी में आ चुका है।

मरीजों के व्यवहार में भी चिड़चिड़ापन देखा जा रहा है। यह वायरस शारीरिक और मानसिक दोनों रूप से मरीज को कमजोर कर रहा है। अचानक से स्वस्थ व्यक्ति की भूख में कमी आ जाना भी कोरोना के नए लक्षणों में से एक है। नाक से ज्यादा स्राव

होना। इस बार ज्यादा सर्दी-जुकाम हो रहा है, और गले में दर्द, कफ आदि की शिकायत ज्यादा दिख रही है। ज्यादा बीमारी बढ़ने पर, इमरजेंसी में फेफड़ों से सम्बन्धित और तंत्रिका संबंधी लक्षण दिख रहे हैं जैसे चक्कर आना, आँख सूजना, स्किन पर रैश होना, सिर दर्द, भ्रम और भटकाव के साथ मस्तिष्क फाग होना।

कोरोना का नया वेरिएंट बहुत खतरनाक है इसलिए यह न सिर्फ कई प्रणालियों पर हमला कर रहा है बल्कि अलग-2 मरीजों पर तरह-तरह से प्रभावित कर रहा है। यही वजह है कि खांसी, सर्दी, सांस संबंधी लक्षणों के अलावा भी कई लक्षण लोगों में नजर आ रहे हैं। कई मरीज स्वस्थ होने में सामान्य की तुलना में बहुत अधिक समय ले रहे हैं। ऐसे मरीज जिन्हें कोरोना के साथ निमोनिया भी हो रहा है, उन्हें ठीक होने में काफी लंबा समय लग रहा है। विशेषज्ञों के अनुसार इस नए वेरिएंट की पहले वाले की अपेक्षा फैलने के क्षमता 30 प्रतिशत ज्यादा है। इसलिए इस बार जरा सी भी लापरवाही से यह एकदम से अपनी गिरफ्त में ले रहा है।

नए वेरिएंट से बचाव- इससे बचाव का तरीका आज भी वही है जो हम पिछली बार कर रहे थे। मास्क लगाना-मास्क लगाना बेहद जरूरी है पर उससे ज्यादा जरूरी है सही तरीके से और सही मास्क लगाना। मास्क से नाक और मुँह को अच्छे से ढकना है। नाक से नीचे मास्क को पहनना किसी काम का नहीं है। न के बराबर ही है इस तरह पहनना। अब यह जानना भी जरूरी है कि मास्क कैसा होना चाहिए। सही मास्क का चयन भी बेहद जरूरी

है। पिछली बार से हम सब ने एन-95 मास्क के बारे में सुना है, इसके अलावा सरजिकल मास्क सही है, पर उनको एक बार इस्तमाल के बाद दोबारा इस्तमाल में नहीं लाना है। कपड़े के मास्क दो या तीन लेयर वाले होने चाहिए और साफ होने चाहिए। पतले कपड़े के मास्क से कोई बचाव नहीं होता है। चयन के साथ-साथ मास्क का साफ होना भी बेहद जरूरी है, गन्दे मास्क से हमें खुद को अपने ही मास्क से इनफेक्शन होने की सम्भावना है।

सैनेटाइजर का इस्तमाल - सैनेटाइजर का इस्तमाल भी हम पिछले एक साल से कर रहे हैं पर इसके भी इस्तमाल के तरीके का ध्यान रखना जरूरी है। इस्तमाल से पहले जानते हैं कि किस तरीके का सेनिटाइजर लेना चाहिए। इस बीमारी के लिए वह सेनिटाइजर लें जिसमें कम से कम 60-70 प्रतिशत तक एल्कोहल हो। इससे कम प्रतिशत एल्कोहल वाला सेनिटाइजर असरदार नहीं होगा। बाजार में दो तरीके के सेनिटाइजर मिल रहे हैं-तरल व जैल वाला। दोनों ही असरदार होते हैं बस इनके इस्तमाल पर ध्यान देने की जरूरत है। तरल वाला सेनिटाइजर लगाते ही वह सूख जाता है तो दिक्कत नहीं पर अगर आप जैल इस्तमाल कर रहे हैं तो उसको लगाने के बाद उसे अच्छे से सूखने दें, उससे पहले हाथों को पोछें नहीं वरना उसका असर कम हो जाएगा। हाथों पर लेने के बाद अच्छे से उसको पूरे हाथों पर फैलाएँ।

हाथ धोना- इन्फेक्शन से बचने का एक और अच्छा उपाय है समय-समय पर 20 सेकेन्ड तक साबुन से अच्छे से हाथों को धोना। साबुन हाथ में लेकर 20 सेकेन्ड तक हाथों को अच्छे से घोंपें।

शारीरिक दूरी- एक और असरदार बचाव है। हम लोगों से दूरी में खड़े हों, इससे अगर कोई छींकता या खांसता है तो वायरस हम

तक नहीं पहुँचेगा। दूरी बनाए रखने से इन्फेक्शन होने का खतरा न के बराबर हो जाता है।

इम्यूनिटी बढ़ाने के घरेलू उपाय- कोरोना संकट में सभी लोग इम्यूनिटी बढ़ाने की बात कर रहे हैं। इन दिनों मौसम भी बदल रहा है, बदलते मौसम में हल्की खांसी और गले में खरास समेत कई तरह की बीमारियाँ हो सकती हैं, लेकिन घरेलू उपाय को अपनाकर इनसे काफी हद तक बचा जा सकता है और इनको दूर किया जा सकता है।

सहजन- यह इम्यूनिटी को बढ़ाने में काफी असरदार होता है। हर तरीके के वायरस को बढ़ने से रोकता है। नारियल पानी, नींबू के साथ- नारियल पानी की खूबियाँ तो हम जानते ही हैं पर अगर हम उसमें आधा नींबू मिलाकर पीएँ तो इससे विटामीन सी की क्षमता कई गुना बढ़ जाती है। हो सके तो रोजाना एक नारियल पानी ले नींबू के साथ। पर एक बात का विशेष ध्यान रखने की जरूरत है कि जो किडनी संबंधी बीमारी से ग्रसित हैं नारियल पानी न लें। हल्दी, लहसुन और प्याज- यह तीन सूपरफूड्स हैं जो हमें बेक्टिरिया से बचाते भी हैं और उन्हें शरीर में मारते भी हैं। इसके अलावा दूध में हल्दी मिलाकर पीना, गुनगुना पानी और हर्बल चाय का काढ़ा भी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ा सकते हैं। लाल शिमला मिर्च- इसमें तीन गुना ज्यादा विटामिन सी पाया जाता है एक नारंगी के मुकाबले। लाल शिमला मिर्च को सलाद की तरह लें या हल्का पकाकर इसका सेवन करें। योग, प्राणायाम- योग से मन शांत होता है। योग करने से नर्वस सिस्टम रिलैक्स होता है। चिंता दूर होती है। शरीर में ऊर्जा के हारमोन्स सूचारू रूप से कार्य करते हैं। प्राणायाम से ऊर्जा का अनुभव होता है, हर सैल को ऊर्जा मिलती है। अच्छी नींद लेना- सही और अच्छी नींद दोनों मन और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए बेहद जरूरी है। शान्तचित्त नींद के लिए सोने से एक घण्टे पहले किसी भी गैजेट का इस्तमाल न करें, जैसे मोबाइल, टीवी आदि।

महानिदेशक, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं प०क०, उत्तराखण्ड डाण्डा लखौण्ड, पो०ओ० गुजराड़ा, सहस्रधारा रोड, देहरादून

पत्रांक-पी०ए०-डी०जी०एम०ए०/2021/293
प्रेषित,

दिनांक 01 मई, 2021

1 समस्त मुख्य चिकित्साधिकारी,
उत्तराखण्ड

2 समस्त प्रमुख/मुख्य चिकित्साधीक्षक,
जिला चिकित्सालय/उप जिला चिकित्सालय,
उत्तराखण्ड

3 समस्त चिकित्साधीक्षक,
समुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र/
प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, उत्तराखण्ड

विषय-कोविड-19 की जांचोंपरन्त रिपोर्ट की प्रत्याशा में लक्षणयुक्त व्यक्तियों के उपचार के सम्बन्ध में।
महोदय,

आप अवगत है कि वर्तमान में कोविड-19 का संक्रमण तेजी से फैल रहा है तथा बड़ी संख्या में व्यक्ति कोविड-19 से संक्रमित हो रहे हैं। यहां यह भी अवगत कराना है कि वर्तमान में प्रत्येक चिकित्सालय में लक्षणयुक्त व्यक्ति जांच हेतु आ रहे हैं, परन्तु कोविड रोगियों की संख्या में वृद्धि के दृष्टिगत कतिपय कारणों से प्रयोगशाला रिपोर्ट समय से प्राप्त न होने के दशा में सम्भावित कोविड रोगियों के उपचार में अनावश्यक विलम्ब हो रहा है।

अतः उपरोक्त के दृष्टिगत कोविड जांच कराने आये व्यक्तियों में से लक्षणयुक्त व्यक्तियों को निम्नानुसार औषधियां, जो पूर्व से एक साथ एकत्रित कर पैक की जायेंगी, को तुरन्त उपलब्ध कराते हुये औषधि लेने की विधि एवं बचाव हेतु उचित सलाह (मास्क को अनिवार्य रूप से पहनना, बार-बार हाथ धोना अथवा सैनीटाइजर का प्रयोग करना एवं सामाजिक दूरी के प्रोटोकॉल का पालन करना) आदि देना सुनिश्चित करें-

Medicine	Dosage	Timing-Freq - Duration
1 TABIVERMECTIN 12 Note :stop after 3 days	1-0-1	After Food-Daily-3 Days
2)TAB AZITHROMYCIN 500 Note :stop after 3 days	1-0-1	After Food-Daily-3 Days
OR		
2) TAB DOXY 100 Note : stop after 7 th days	1-0-1	After Food-Daily-7 Days
3)TAB CROCIN 650	SOS	
4)LIMCEE 500MG TABLETComposition: ASCORBIC ACID 500 MG	1-0-1	Before food-Daily-10Days
5)ZINCONIA 50MG TABLETComposition: ELEMENTAL ZINC 50 MG	1-0-1	Before Food-Daily-10 Days
6)CALCIROL SACHETComposition: CHOLECALFEROL 60000 IU with MILK Note : once per week after that once per month		

सलाह
1 प्रतिदिन 3 से 4 लीटर गुनगुना पानी, दिन में तीन बार भाप लें, आठ घंटे सोयें, 45 मिनट व्यायाम करें या टहलें।
2 05 दिन तक लगातार बुखार रहने पर, शरीर में ऑक्सीजन की कमी (SpO2<95%) तथा सांस फूलने पर Tab Methylprednisolone 16 mg की 1.1 गोली (सुबह/सांय) अथवा Dexomethasone 6mg की 1-1 टेब (सुबह/सांय), जो कि मोडिसिन किट कि साथ उपलब्ध रहेगी, चिकित्सक के परामर्श के बाद ली जाये।
कोविड उपचार हेतु चिकित्सा स्वास्थ्य एवं प०क० विभाग, उत्तराखण्ड से जारी पूर्व आदेश पी०ए०एम०ए०/2021/222दिनांकित 18 अप्रैल, 2021 को इस सीमा तक संशोधित समझा जाये।

(तृप्ति बहुगुणा)
महानिदेशक

प्राकृतिक चिकित्सा का दसवां सिद्धान्त

"इस चिकित्सा में उत्तेजक एवं प्रयोगशाला निर्मित रसायनों का प्रयोग नहीं किया जाता"

संकलनकता: शंकर दत्त

विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि शरीर में बीमारियों का एक मात्र कारण शरीर में गंदगी का जमा होना है। हर बीमारी का जन्म इस गंदगी का शरीर में बहुत समय तक बने रहना है। प्राकृतिक खान-पान में जो गंदगी शरीर में जमा होती है, वह प्राकृतिक रूप से ही कुछ दिनों में शरीर से निकल जाती है। किंतु गैर प्राकृतिक अंश शरीर में बहुत दिनों तक रह जाते हैं, हमारे

शरीर के पास इन्हें बाहर निकालने का प्राकृतिक तरीका नहीं है। इन्हें किसी बाह्य दबाव से निकालना होता है। इसे इस तरह से समझते हैं, हम बाजार से सब्जी लाये और इसे लाने के लिए हमने पौलीथीन का प्रयोग किया। अगर हम सब्जी के कुछ हिस्से को प्रयोग के बाद शेष को ऐसे ही छोड़ देते हैं तो यह सब्जी मौसम के अनुसार 15 से 30 दिनों के अंदर सूक्ष्म जीवों द्वारा प्राकृतिक रूप से अपघटित कर खत्म हो जाएगी। अधिक जटिल संरचना के प्राकृतिक तत्व भी 3 से 6 महीने के अंदर सड़ कर प्रकृति के अन्य पारस्थितिकी तंत्र के लिए तैयार हो जाते हैं। किंतु उस पौलीथीन को खत्म होने में 100 वर्षों से भी अधिक का समय लगेगा और अपघटन होने पर यह पारस्थितिकी तंत्र में प्रयोग भी नहीं होता।

यही रसायन युक्त औषधियों के साथ भी होता है। रसायन का शरीर में क्रिया के पश्चात

शरीर से बाहर निकलना जरूरी है। इसलिए दवा कंपनी को किसी भी रसायनिक दवा को बाजार में लाने से पहले सरकार से लाइसेंस लेना पड़ता है। इसमें कंपनी को यह बताना होता है कि यह दवा शरीर में किस अंग पर कैसे कार्य करेगी और कार्य करने के बाद शरीर इसका क्या करेगा और इसे कैसे शरीर से बाहर निकालेगा। किंतु कोई भी दवा कंपनी किसी भी ड्रग के 100 प्रतिशत बाहर निकलने का दावा नहीं करती। इसका मतलब दवा का अपना कार्य खत्म करने के पश्चात उसका कुछ अंश वहीं शरीर में पड़ा रहता है और शरीर में गन्दगी उत्पन्न कर शरीर को नुकसान पहुँचाता है। जैसे सब्जी के उपयोग के बाद पालीथीन पर्यावरण को नुकसान पहुँचाती है।

इसलिए प्राकृतिक चिकित्सा में रसायन युक्त मानव निर्मित दवाओं का प्रयोग बिल्कुल वर्जित किया गया है। प्राकृतिक चिकित्सा में प्रकृति निर्मित रसायनों का प्रयोग किया जाता है। जैसे तुलसी, करी पत्ता, एलोवेरा, सहजन, गिलोय में ऐसे प्राकृतिक रसायन हैं, जो शरीर से गंदगी निकाल कर शरीर को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं। इसलिए जहाँ तक हो सके प्राकृतिक रसायनों का प्रयोग करना चाहिए। जरूरत होने पर कुशल चिकित्सक की देख रेख एवं सलाह से ही अन्य रासायनिक औषधियों का उपयोग करना चाहिए।

(रोगी स्वयं चिकित्सक एवं बैंक टू नेचर में लेखों पर आधारित)

खबरें कार्य क्षेत्र से

श्रमयोग संस्थान सोसायटी पंजीकरण एक्ट के तहत पंजीकृत एक जन संस्थान है। श्रमयोग के द्वारा उत्तराखण्ड राज्य व देश के अलग-अलग हिस्सों में जन समुदायों के साथ मिलकर विकासात्मक गतिविधियों को अन्जाम दिया जाता है। यहाँ श्रमयोग के कार्य क्षेत्र की खबरें दी जा रही हैं। बच्चे अपने क्षेत्र में बदलते तापमान पर नजर रख रहे हैं। यहां उनकी अभिव्यक्ति को स्थान दिया जा रहा है।

- सम्पादक

नैनीडांडा क्लस्टर

ऊषा देवी, ऑलेथ

इस बार नैनीडांडा क्लस्टर के समूहों में देवचुली के समूह को छोड़कर बाकी सभी समूहों की बैठकें आयोजित की गयीं। बैठकें अध्यक्षों द्वारा शुरू की गयीं। जनगीत गाये गये। सचिवों द्वारा प्रस्ताव लिखे गये। देवचुली में शादी के कारण बैठक नहीं हो पायी। बैठकों में हल्दी इकट्ठा करने की बात कही गयी तथा श्रमयोग पत्र पढ़ने को तथा श्रमयोग पत्र में लिखने को कहा गया। प्रत्येक सदस्या द्वारा रचनात्मक महिला मंच की सदस्यता शुल्क 5 रु0 जमा किये गये। पिछली बार जो बीज दिया गया वह ठीक ढंग से उगा है। सामूहिक खेती के बारे में चर्चा की गयी। इस बार आग से सारे जंगल राख हो गये हैं। इस बार कोरोना बीमारी बहुत बुरे ढंग से फैल रही है। जिसकी चपेट में अब गाँव वाले भी आ रहे हैं। मास्क लगाये रखें, दो गज की दूरी बनायें रखें व साफ-सफाई का ध्यान दें।

चाँच एवं रथखाल क्लस्टर

राकेश, दाड़िमी

इस बार चाँच एवं रथखाल क्लस्टर में रामपुर और देशवाल बाखली को छोड़कर सभी जगह बैठकें आयोजित की गयीं। इस बार की बैठकों में सदस्याओं ने

बीज कोष के लिए 20-20 रुपये जमा किये। महिलाओं को बीज काफी अच्छा लगा, पर कहीं-कहीं पर लोग जंगली जानवरों के कारण बीज लगाना ही नहीं चाहते। कुछ सदस्याओं का कहना है कि लम्बे समय से बारिश न होने के कारण स्रोतों के पानी में कमी आयी है। जिससे लोगों को पीने के लिए भी पानी मिलना मुश्किल है। ऐसे में किचन गार्डन में सब्जी लगाने के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। पर अब महिने के अंत में बारिश हुई है और लोगों ने बीज लगाना शुरू कर दिया है।

बैठकों में इस बार महिलाओं द्वारा रचनात्मक महिला मंच का सदस्यता शुल्क जमा किया गया। जिसमें महिलाओं ने 5-5 रुपये द्विवार्षिक शुल्क जमा किया, जिसे रचनात्मक महिला मंच के बैंक खाते में जमा किया जाएगा। महिलाओं ने श्रम उत्पाद में हल्दी इकट्ठा करना शुरू कर दिया है। इस महीने क्लस्टर बैठकों का आयोजन होना था पर कोरोना के बढ़ते मामलों के कारण इन्हें स्थगित कर दिया गया है। जिसकी सूचना मंच की अध्यक्ष ने वहाट्सअप ग्रुप के माध्यम से दी।

गिगड़े क्लस्टर

देवकी देवी, गिगड़े

गिगड़े क्लस्टर की पहली बैठक डयोनो में हुई। बैठक में सभी सदस्याएं उपस्थित रहीं, किंतु ग्राम पंचायत का कार्य चलने के कारण अधिक समय नहीं दे पायीं फिर भी बीजों को लेकर बात हुई। लोगों का कहना था कि पानी के अभाव के चलते हम बीज अभी नहीं बो पाये हैं। जब बारिश होगी तभी बोयेंगे। सदस्यता शुल्क के बारे में बात हुई तो सदस्याओं का कहना था हमें कार्ड की

कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए महिलाओं ने इस ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। किंतु जब उन्हें इसके विषय में बताया गया तब महिलाएं इसे समझ गयीं। इस बार की सभी बैठकों में महिलाओं ने समय कम दिया।

इस बार हमारे लिए बैठक में करने के लिए बहुत काम था, सदस्यता शुल्क जमा करना, रसीद देना, एम.आई.एस भरना, तथा बीज कोष पर बात करना, क्लस्टर स्तर पर होनी वाली बैठकों के विषय में बताना, साथ-साथ रचनात्मक महिला मंच

के पदाधिकारियों के चुनाव के बारे में बताना। रिक्वासी में किसी की मृत्यु होने के कारण वहाँ बैठक आयोजित नहीं की गयी। 9 तारीख को मंटवास एवं खलपाटी में तथा 10 को काने में बैठक आयोजित की गयी जिसमें समूह की सदस्या पूजा देवी ने समूह से 1000 रुपये का ऋण लिया। 12 को गिगड़े में बैठक कि गयी। बैठक में समूह की सदस्या देवकी देवी ने समूह से 1000 रुपये ऋण लेने की बात कही जिसमें सभी सदस्याओं ने सहमति जतायी। क्लस्टर बैठक 24 को काने के स्कूल में होनी तय की गयी थी लेकिन कोरोना के चलते सभी क्लस्टर बैठकों को स्थगित कर दिया गया।

जसपुर क्लस्टर

निर्मला देवी, कोट जसपुर

इस बार कोट जसपुर क्लस्टर बैठकों में सभी सदस्यायें उपस्थित रही। बैठक में काफी बातों को लेकर चर्चा हुई। हल्दी के एकत्रीकरण को लेकर बात की गई, किचन गार्डन में जो बीज लगाये हैं उन के बारे में सदस्याओं से पूछा गया। सदस्यता शुल्क, एम.आई.एस, बीज कोष, क्लस्टर स्तर पर होनी वाली बैठकें व रचनात्मक महिला मंच के पदाधिकारियों के चुनाव के बारे में चर्चा की गई।

साथियों कोरोना महामारी फिर से तेजी से बढ़ रही है। हमें अपनी, परिवार व समाज की सुरक्षा करनी है। हमें बीमारी से लड़ना है, बीमार से डरना नहीं है। साथियों अपने घर व परिवार का ध्यान रखें अपने आस-पास सफाई रखें। बार-बार हाथ धोयें व मास्क पहने रखें।

उजाला समूह कोट जसपुर कि सदस्यों ने सामूहिक खेती करने का निर्णय लिया था। वर्षा न होने के कारण अदरक सूख गया। हमने अपने-अपने खेतों में थोड़ा-थोड़ा लगा दिया है।

थला, जमरिया क्लस्टर

सुरेन्द्र, जमोली

अप्रैल माह में दोनों क्लस्टरों के अलग-अलग गाँवों में गठित महिला स्वयं सहायता समूहों की मासिक बैठकों का आयोजन किया गया। श्रमयोग टीम बाहरी कामों में व्यस्त होने के कारण श्रम-सखी द्वारा अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुये मुख्य रूप से सदस्यता शुल्क, एम.आई.एस, बीज कोष, रचनात्मक महिला मंच की क्लस्टर स्तर पर होनी वाली बैठकें व रचनात्मक महिला मंच के पदाधिकारियों के चुनाव के बारे में चर्चा की गई। श्रमयोग पत्र को भी प्रत्येक सदस्य तक वितरण किया गया। यह पत्र सल्ट व नैनीडांडा ब्लाक के ग्रामीण समुदायों के बीच लिखने पढ़ने व स्थानीय विचारों को एक मंच देने का कार्य कर रहा है।

कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट

वायु गुणवत्ता सूचकांक (सल्ट)

दिनांक	प्रातः 06:00 बजे	सांय 06:00 बजे
12 अप्रैल	120	124
13 अप्रैल	111	113
14 अप्रैल	129	128
15 अप्रैल	103	122
16 अप्रैल	113	114
17 अप्रैल	75	60
18 अप्रैल	47	45
19 अप्रैल	43	48
20 अप्रैल	42	46
21 अप्रैल	37	25
22 अप्रैल	10	12
23 अप्रैल	8	7
24 अप्रैल	7	23
25 अप्रैल	7	12
26 अप्रैल	11	14
27 अप्रैल	19	23
28 अप्रैल	24	24
29 अप्रैल	109	162
30 अप्रैल	105	75

बाल मंच के पर्यावरण चेतना केन्द्रों की रिपोर्ट

दिनांक	प्रातः 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)			सांय 06:00 बजे का तापमान (सेन्टीग्रेड में)		
	गिगड़े (सल्ट)	ऑलेथ (नैनीडांडा)	चाँच (सल्ट)	गिगड़े (सल्ट)	ऑलेथ (नैनीडांडा)	चाँच (सल्ट)
1 अप्रैल	21	20		22.5	21	
2 अप्रैल	20	21		22	21.5	
3 अप्रैल	21.5	22		23	22	
4 अप्रैल	21.9	21		22	21.5	
5 अप्रैल	22	22		22.5	21	
6 अप्रैल	21.9	21.5		22.6	22	
7 अप्रैल	20	23		21.5	22	
8 अप्रैल	21.5	22.5		20	21	
9 अप्रैल	22	23		22	22	
10 अप्रैल	23	22		23	21	
11 अप्रैल	23.4	22.5		23.5	22	
12 अप्रैल	24	23		22.5	22	
13 अप्रैल	23.8	22.5		24	23	
14 अप्रैल	24	22		23	21	
15 अप्रैल	25	23		24.5	22	
16 अप्रैल	24.9	22.5		24.9	21	
17 अप्रैल	25	23		24	22	
18 अप्रैल	24.5	23.5		24.8	22	
19 अप्रैल	25	24		25.5	23	
20 अप्रैल	24	22.5		24	22	
21 अप्रैल	24.5	23		25	24	
22 अप्रैल	26	22		26.5	21.5	
23 अप्रैल	28	21		29	20	
24 अप्रैल	27	18		27	19	
25 अप्रैल	25.5	19		26.5	18	
26 अप्रैल	26	20		27	21	
27 अप्रैल	27	22.5		28	23	
28 अप्रैल	26.5	23		27	29	
29 अप्रैल	27.4	-		27.8	-	
30 अप्रैल	27.7	-		28	-	

तापमान रिकॉर्ड नहीं हुआ।

तापमान रिकॉर्ड नहीं हुआ।



चाँच धारा विकास कार्यक्रम

25 अप्रैल, 2021						
स्रोत का नाम	पी0एच0			टी0डी0एस0		
	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग	पहली रीडिंग	दूसरी रीडिंग	तीसरी रीडिंग
डौठा पानी नौला	6.7	6.7	6.7	23	23	23
धारा पानी	7.2	7.2	7.2	34	34	34
शिव मन्दिर नौला	7.1	7.1	7.1	40	40	40
हैंड पंप नौला	6.8	6.8	6.8	36	36	36

नये लेबर कोड से प्रवासी मजदूरों में निराशा

❧ विक्रम सिंह

इन दिनों पूरे देश में मजदूरों के कानूनों पर चर्चा चल रही है इसका मुख्य कारण केन्द्र सरकार द्वारा 29 श्रम कानूनों को चार श्रम संहिताओं (लेबर कोड्स) में बदलना है। यह पूरी प्रक्रिया श्रम कानूनों को कमजोर करते हुए मजदूरों के जीवन को बाजार के हवाले करने की ही कवायद है, जिससे कॉरपोरेट जगत को मजदूरों के श्रम का शोषण कर मुनाफ़ कमाने की खुली छूट मिल जाएगी। इन लेबर कोड्स को 1 अप्रैल से लागू होना था परन्तु मजदूरों के भारी विरोध को देखते हुए फ़्लिहाल केन्द्र सरकार को लेबर कोड्स को लागू करने की प्रक्रिया पर रोक लगाने के लिए मजबूर होना पड़ा, परन्तु खतरा टला नहीं है।

पूर्व में प्रवासी मजदूरों के लिए 1979 में अंतर-राज्य प्रवासी कर्मकार (नियोजन का विनियमन और सेवा शर्त) अधिनियम बनाया गया था। तमाम कमियों के बावजूद यह एक अच्छा कानून था जिसमें प्रवासी मजदूरों के लिए कई तरह से प्रावधान थे। हालाँकि इस कानून को सही से कभी लागू नहीं किया गया। प्रवासी मजदूरों को काम पर रखने वाले ठेकेदारों और प्रधान नियोजकों से तो आशा की नहीं जा सकती, इनको लागू करने की मुख्य जिम्मेदारी सरकारों पर थी और एक के बाद एक बनी सरकारों ने इसको लागू करने की जहमत नहीं उठाई।

कोरोना काल में तालाबंदी के कटु और अमानवीय अनुभव के बाद सभी उम्मीद कर रहे थे कि सरकार प्रवासी मजदूरों के लिए ठोस कानून बनाएगी जिससे उनके हालात में कुछ सुधार हो सके। परन्तु केन्द्र सरकार ने इसके विपरीत जाते हुए पहले से मौजूद कानून को भी लगभग खत्म कर दिया है। कहने को अंतर-राज्य प्रवासी कर्मकार (नियोजन का विनियमन और सेवा शर्त) अधिनियम, 1979 को लेबर कोड्स में मिला दिया गया है परन्तु असल में इसे कमजोर ही किया गया है। लेबर कोड्स लागू होने के बाद प्रवासी मजदूर व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्यस्थल स्थिति संहिता कोड

व सोशल सिक्योरिटी कोड के अन्तर्गत आयेंगे। सबसे पहले तो समझने की जरूरत है कि उपरोक्त दोनों कोड्स राज्यान्तरिक (राज्य के भीतर ही एक जगह से दूसरी जगह) प्रवासी मजदूरों पर लागू नहीं हैं। हालाँकि पिछले कानून (अंतर-राज्य प्रवासी कर्मकार अधिनियम) भी प्रदेश की सीमाओं के भीतर प्रवास करने वाले मजदूरों के लिये नहीं थे परन्तु सरकार के पास यह एक मौका था कि प्रवासी मजदूरों के इस बड़े हिस्से को कानून के दायरे में लाया जाय। वर्ष 2011 के जनगणना के आंकड़ों के अनुसार प्रवास करने वाले कुल मजदूरों का 88 प्रतिशत हिस्सा राज्य की सीमाओं में ही अपने पैतृक गांव से दूसरी जगह पर काम करने वाले मजदूरों का है। मतलब अधिकतर मजदूर नये कोड में भी अपने अधिकारों से वंचित कर दिये गये हैं।

नये कोड्स में प्रवासी मजदूरों की परिभाषा में भी बदलाव किया गया है जिससे इसका दायरा कुछ बढ़ने की आशा है। पहले केवल ठेकेदारों के साथ या सीधे प्रधान नियोजक के पास काम करने वाले मजदूर ही प्रवासी मजदूरों के कानून के दायरे में आते थे, परन्तु अब स्वतंत्र तौर पर काम करने के लिए दूसरे प्रदेशों में जाने वाले मजदूर भी दस दायरे में आयेंगे। परन्तु यह दायरा अगले प्रावधान से बिलकुल सिकुड़ जाता है। व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्यस्थल स्थित कोड के अनुसार यह उन प्रतिष्ठानों पर ही लागू होगा जहाँ मजदूरों की न्यूनतम संख्या 10 होगी। दरअसल यह न्यूनतम सीमा दोगुनी कर दी गई है क्योंकि इससे पहले के कानून में मजदूरों की यह संख्या 5 थी। छठी आर्थिक जनगणना (वर्ष 2013-2014) के अनुसार भारत में 70 प्रतिशत प्रतिष्ठान 6 से कम श्रमिकों को रोजगार देते हैं। यह इकलौता प्रावधान छोटे (यहाँ दस से कम संख्या में मजदूर है) प्रतिष्ठानों में काम करने वाले लाखों प्रवासी मजदूरों को अनिवार्य रूप से श्रम कानूनों के लाभ से वंचित कर देगा।

पहले के कानून में ठेकेदारों और प्रधान

नियोजक पर प्रवासी मजदूरों के पंजीकरण की अनिवार्य जिम्मेवारी थी। प्रवासी मजदूरों को फोटों लगी हुई पासबुक देना भी उनकी जिम्मेवारी थी। लेकिन वर्तमान कोड्स में ऐसा कुछ भी नहीं है। किसी की भी यह जिम्मेवारी सुनिश्चित नहीं की गई है। कहा गया है कि मजदूर खुद ऑनलाइन पंजीकरण कर सकते हैं। यह अजीब स्थिति है जब ठेकेदार और मालिक को तो जिम्मेवारी से मुक्त कर दिया गया है लेकिन प्रवासी मजदूर जिनके पास स्मार्ट फोन और इंटरनेट कनेक्टिविटी नहीं है उनसे सरकार आशा कर रही है कि वह मजदूर खुद अपना पंजीकरण करेंगे। परिणाम स्वरूप अधिकतर मजदूर पंजीकरण नहीं करवायेंगे। प्रवासी मजदूरों का रिकॉर्ड न होने के पैदा हुई भयानक स्थिति हम हाल ही में देख चुके हैं, जब तालाबंदी और उसके बाद के समय में प्रवासी मजदूरों के बारे में ठोस आंकड़े न होने के चलते राज्य और केन्द्र सरकारों कैसे मूक दर्शक बनी रहीं और प्रवासी मजदूरों को जीवन की जंग लड़ते हुए देखती रहीं। यहाँ तक कि देश की संसद में सरकार ने स्वीकार किया कि सरकार के पास तालाबंदी के दौरान मरने वाले प्रवासी मजदूरों का रिकॉर्ड नहीं है। जब ठोस रिकॉर्ड ही नहीं तो काहे कि योजना और मजदूरों की भलाई के कार्यक्रम। इसलिए पंजीकरण और प्रवासी मजदूरों का हिसाब रखने की व्यवस्था सुनिश्चित करने में विफलता इन कोड्स की एक बेहद महत्वपूर्ण कड़ी है।

प्रवासी मजदूरों के लिए यह श्रम कानून ग्रामीण भारत में कृषि में काम करने वाले करोड़ों खेत मजदूरों के लिए लागू नहीं होते हैं। यह बताने की आवश्यकता नहीं है कि हमारे देश में खेत मजदूरों का एक बड़ा हिस्सा देश के दूसरे राज्यों में जाकर काम करता है जो आर्थिक और सामाजिक शोषण का शिकार होता है। असल में ज्यादातर प्रवासी खेत मजदूर तो आधुनिक बंधुआ मजदूरों की तरह काम करते हैं, जो बोलने के लिए आजाद हैं परन्तु एक बार खेत पर पहुँचने के बाद उनको अपने मालिक के

अनुसार ही काम करना पड़ता है। अन्यथा पैसे न होने की वजह से न तो वह अपने घर वापिस जा सकते हैं और न ही दूसरे मालिक उनको काम देते हैं। ज्यादातर मामलों में पूरा परिवार ही एक मालिक के लिए काम करत है। देश में कुल 14 करोड़ से ज्यादा

एनआरसी /सीए की आँच में हमारे समाज

❧ आसना, श्रमयोग

पिछले वर्ष जो खबर चर्चा में छाई हुई थी मैं उसकी तरफ़ आप का ध्यान पुनः लेकर जाना चाहती हूँ। साल 2020 की शुरूआत सीएए और एनआरसी के विरोध के साथ हुई थी। फरवरी आते-आते तपिश इतनी ज्यादा बढ़ गई कि दिल्ली इसकी चपेट में आकर झुलस गई। 23 फरवरी से 29 फरवरी तक दिल्ली के उत्तर पूर्वी हिस्से में दंगा होता रहा। इस दौरान 53 लोगों ने जान गवाई जबकि बहुत लोग घायल भी हुए। इस दौरान कड़के की ठण्ड के बीच शाहीन बाग में सैकड़ों महिलाएँ सीएए और एनआरसी के विरोध में महिनो तक सड़क पर बैठी रहीं। दिल्ली दंगों की आँच से उबरने के लिए देश होली के रंगों का सहारा ले रहा था कि पूरी दुनिया में खोफ का पर्याय बन चुके कोरोना वायरस ने भारत में अपना कहर बरपाना शुरू कर दिया व लॉकडाउन लगा दिया गया। उसके बाद ऐसा नजारा देखने को मिला जैसा 1947 में भारत-पाकिस्तान के विभाजन के दौरान नजर आया होगा। शहरों में रहने वाले हजारों मजदूर कोई साधन न होने पर पैदल ही अपने घरों को निकल गए। मैं आपका ध्यान पिछली घटनाओं की तरफ़ इस लिए ले जाना चाहती हूँ क्योंकि जो बात मैं करना चाहती हूँ वो इन घटनाओं से जुडी हुई है। मैं आजकल नैनीताल जिले में एक सर्वे कर रही हूँ जिसके कुछ अनुभव आपको बताना चाहती हूँ। सर्वे में पता चल रहा है कि कोविड-19 के कारण पैदा हुई परिस्थितियों में शहरी परिवारों की आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हुई है और कुछ परिवारों की स्थिति बहुत ही नाजुक है। हालत यह है कि अगर काम मिला

खेत मजदूर बिना किसी कानूनी संरक्षण के काम कर रहे हैं। दरअसल प्रवासी मजदूरों के लिए एक अलग कानून की आवश्यकता है। परन्तु सरकार से उम्मीद की जाय तो कैसे ?

न्यूज क्लिक से साभार

आँच में हमारे समाज

तो खाना खा लिया अगर नहीं मिला तो.....। सरकार द्वारा देश में एनआरसी /सीए को लागू किया गया, इसकी वजह से समाज के एक तबके में भारी डर है। नैनीताल जिले में जहाँ हिन्दू व मुसलमान आपसी सोहार्द से साथ रहते हैं जहाँ पर नजमा के बीमार होने पर आरती को फर्क पडता है और वो उसकी सहायता करती है और आरती के बीमार होने पर नजमा सहायता करती है। वहाँ एक मुस्लिम परिवार से मुलाकात हुई। मैंने उन्हें अपना परिचय दिया और उनके घर आने का कारण बताया। उस परिवार के मुखिया ने मुझे मना कर दिया यह कह कर कि आप सरकार की तरफ से आयी हैं तो हमें कोई भी जानकारी नहीं देनी है। हमें पता है आप लोग एनआरसी के मामले की जाँच कर रहे हैं। हमें कोई बात नहीं करनी। इस बारे में मेरे उन्हें समझाने के सारे प्रयास विफल हो गए। अंतिम शब्द उन्होंने कहे कि आप अन्दर आ जाइए, पानी चाय पीजिये, हमें ऐतराज नहीं है। परन्तु मैं अपने घर की कोई भी जानकारी नहीं दे सकता माफ करें। वो मुस्लिम कालोनी में पहला घर था। अब मुझे लगा कि शायद यहाँ सर्वे हो भी पाएगा या नहीं? बडी हिम्मत कर के हम आगे बढ़े। वहाँ सब हमसे डरे हुए थे। परन्तु आगे जा कर मेरी जान पहचान के एक भाई मिले मैंने उन्हें सारी जानकारी दी। उसके बाद कुछ काम बना। और हमने सर्वे किया। मैं वहाँ कुछ लोगों को जानती थी। कुछ पुरानी दोस्तों से भी बात की जो स्कूल के दिनों में साथ पढ़ती थीं। तब काम हुआ। उस समय जो बात मेरे जहन में चल रही थी कि हमारी सरकारें ऐसे फैसले क्यों ले लेती हैं ?

फिर याद आई टिहरी

❧ राकेश, सल्ट, दाइमी

हाल ही में हम टिहरी गये, पंचायती राज के काम से साथ में पंकज था। जाना हमें देवप्रयाग था लेकिन वहाँ जाने के लिए तोता घाटी वाली रोड बंद थी जिसके कारण हमें वाया चंबा जाना पड़ा। सालों से बहुत मन था टिहरी को देखने का, जो अब जाकर पूरा हुआ। पंकज व मैं दिन में 1 बजे देहरादून अपने श्रमयोग कार्यालय से निकले।

हालाँकि सुबह से ही मेरी एक आँख में पता नहीं कुछ काट सा रहा था जिसके कारण मेरा सफ़्ट में जाने का मन नहीं था। क्योंकि हम लोग बाइक से निकले थे। जब भी हवा आँख से टकरा रही थी तब-तब दर्द हो रहा था और आँसू निकल रहे थे। पर मैं चुपचाप हेलमेट का शीशा नीचे किये हुए बैठा था। पंकज मेरे कारण बोर हो रहा था। पहले हम लोग नरेन्द्र नगर पहुँचे फिर 4 बजे चंबा, जहाँ विक्रम भाई और आसना हमें मिले और फिर हम टिहरी के लिए निकल पड़े। चंबा से टिहरी 24 किलोमीटर दूर था। हमारा यह 24 किलोमीटर का सफर बडी उत्सुका में कटा कि आखिर कैसा होगा टिहरी बाँध? जिसको किताबों में पढ़ा, खबरों में सुना था।

आखिरकार बाँध दिखा पर पहली बार देखते ही मन उदास सा हो गया। उसके चारों ओर एक लाइन सी बनी थी जिसके 10 मीटर नीचे तक पूरा सूखा और फिरे पानी था, शायद बारिश में यहाँ तक भरता हो। देखने के लिए एक जगह पर बाइक रोकी, कुछ फोटो ली फिर सोचने लगा आखिर कैसे बना होगा इतना बड़ा बाँध। पता नहीं इसको बनाने में कितने ही गाँव डूबे होंगे, कितने ही पेड़ों की बली चढ़ी होगी, कितने ही लोग बेघर हुए होंगे। लोगों को तो अलग-अलग जगह बसा दिया होगा पर, पता नहीं उनका क्या ही हुआ होगा जिनका घर डूब क्षेत्र से कुछ ही ऊपर था। कैसा होगा वह मंजर जब लोगों ने अपने घरों को डूबते हुए देखा होगा।

मन में बार-बार नरेन्द्र सिंह नेगी जी का वो गाना "अबरी दां तु लम्बी छूटी लैकि ऐई, ऐ गे बघत अधिर, टिहरी डूबण लगीयू छ बेटा डाम क खातिर" (अब की बार तु लम्बी छूटी लैके आना, समय बहुत अधीर हो रहा है। अपनी टिहरी डूबने लगी है बेटा बाँध के लिए) पता नहीं क्यों जूँज सा रहा है। पता नहीं यह विकास है या विनाश समझ नहीं आता। यहाँ हँसते हुए लोग भी मानों नकली हँसी हँस रहे हों। कभी झाँकते होंगे झील में अपने डूबे हुए घरों को देखने के लिए, पर पानी में पहाड़ों की परछाई को देखकर मन बहला लेते होंगे।

आपसे निवेदन है

प्रिय मित्रो नमस्कार !

श्रमयोग एक स्वैच्छिक लोक संस्थान है जो विगत 10 वर्षों से भारत वर्ष के उत्तराखण्ड राज्य में पहाड़ी जिलों अल्मोड़ा एवं पौड़ी गढ़वाल में कार्य कर रहा है। हम स्थानीय समुदाय को मजबूत सामाजिक पूंजी के निर्माण के लिये जन संगठनों में संगठित होने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। श्रमयोग के प्रयासों से पिछले 10 वर्षों में लगभग 60 गाँवों में लोगों (विशेषकर महिलाओं व बच्चों) ने अपने आप को जन संगठनों में संगठित किया है और आज ये संगठन स्थानीय मुद्दों पर अपनी आवाज मुखरता से उठा रहे हैं। आज ये संगठन "श्रम-जन स्वराज अभियान" व "प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान" के अन्तर्गत पंचायती राज सशक्तिकरण, स्थानीय संसाधन आधारित आजीविका संवर्धन एवं जल-जंगल-जमीन व जैव विविधता संरक्षण के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं।

श्रमयोग इन सब गतिविधियों के संचालन हेतु किसी सरकारी एवं गैर सरकारी स्रोत से आर्थिक मदद नहीं लेता, सभी गतिविधियां लोगों के सहयोग से चलती हैं। संस्था जमीन से जुडकर जमीनी मुद्दों पर कार्य कर रही है। जिसका प्रभाव हमारे कार्यक्षेत्र में देखा जा सकता है किन्तु संसाधनों के अभाव में कार्यक्रम का विस्तार एक चुनौती है। क्योंकि कार्यक्रम को सुगम बनाने एवं अभियान को लगातार चलाने हेतु न्यूनतम मानव संसाधनों कि आवश्यकता होती है जिन्हें अपने जीवनयापन हेतु एक न्यूनतम नगद आय की आवश्यकता होती है।

लम्बे अनुभव के बाद हमने इस चुनौती से निपटने का एक वैकल्पिक रास्ता खोजा है - "श्रम सखी"। श्रम सखी 5-6 गावों के बीच एक ऐसी स्थानीय महिला नेता है, जो अभियानों की गतिविधियों को अपना अतिरिक्त समय देती हैं। क्योंकि महिने में अपने समय का एक बड़ा हिस्सा ये महिलाएं अभियानों को देती हैं, अतः स्थानीय समुदाय के साथ मिलकर हमने यह तय किया कि इन महिलाओं का निश्चित मासिक मानदेय होना चाहिए, जो रू0 2000 मासिक तय है। वर्तमान में 6 श्रम सखियां अभियान से जुडी हैं। जो अपने घरेलू काम के साथ अभियानों की गतिविधियों में सहयोग कर अपने परिवार के लिए नगद आय भी जुटाती हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आने वाली इन श्रम सखियों को मिलने वाली यह नियमित मासिक आय उनके परिवारों को मजबूती देती है। अपने इस काम से इन महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव आया है और इन्हें समाज में पहचान मिली है।

आपसे निवेदन है कि आप एक श्रम सखी के लिये आर्थिक सहयोग कर इन्हें आगे बढ़ने में सहयोगी बनें। हम इसके लिये आपसे श्रमयोग को रू0 2000 मासिक आर्थिक मदद करने का निवेदन करते हैं। अपनी क्षमता के अनुरूप सहयोग करें। आपका सहयोग इस अभियान के विस्तार में सहयोगी होगा। धन्यवाद

टीम श्रमयोग।

बाल मंच का पृष्ठ

इस पृष्ठ में श्रमयोग के "प्राकृतिक धरोहर बचाओ अभियान" से निकली जानकारियों के साथ-साथ बाल मंच की गतिविधियों एवं बाल मंच के सदस्यों की अभिव्यक्तियों को स्थान दिया जाता है। एवं बच्चों से सम्बन्धित लेखन को स्थान दिया जाता है।

-सम्पादक

घंटी की कीमत

रामदास एक ग्वाले का बेटा था। रोज सुबह वह अपनी गायों को चराने जंगल में ले जाता था। हर गाय के गले में एक-एक घंटी बंधी थी जो गाय सबसे अधिक सुंदर थी उसके गले में घंटी भी अधिक कीमती बंधी थी। एक दिन एक अजनबी जंगल से गुजर रहा था। वह उस गाय को देखकर रामदास के पास आया, और बोला "यह घंटी बड़ी प्यारी है! क्या कीमत है इसकी?"

"बीस रुपये।" रामदास ने उत्तर दिया।
"बस, सिर्फ बीस रुपये! मैं तुम्हें इस घंटी के चालीस रुपये दे सकता हूँ।"

सुनकर रामदास प्रसन्न हो उठा। झट से उसने घंटी उतारकर उस अजनबी के हाथ में थमा दी और पैसे अपनी जेब में रख लिये। अब गाय के गले में कोई घंटी नहीं थी। घंटी की टुकड़े से उसे अंदाजा हो जाया करता था। अतः अब इसका अंदाजा लगाना रामदास के लिए मुश्किल हो गया कि गाय इस वक्त कहाँ चर रही है। जब चरते-चरते गाय दूर निकल आई तो अजनबी को मौका मिल गया वह गाय को अपने साथ लेकर चल पड़ा।



तभी रामदास ने उसे देखा। वह रोता हुआ घर पहुँचा और सारी घटना अपने पिता को सुनाई। उसने कहा, "मुझे तनिक भी अनुमान नहीं था कि वह अजनबी मुझे घंटी के इतने अच्छे पैसे देकर टग ले जाएगा।" पिता ने कहा "ठगी का सुख बड़ा खतरनाक होता है। पहले वह हमें प्रसन्नता देता है, फिर दुख। अतः हमें पहले ही से उसका सुख नहीं उठाना चाहिए।" लालच से कभी सुख नहीं मिलता।

मनुष्य या पशु

छुट्टी हो गयी थी। सब लड़के उछलते-कुदते, हँसते-गाते पाठशाला से निकले। पाठशाला के फाटक के सामने एक आदमी सड़क पर लेटा था। किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। सब अपनी धुन में चले जा रहे थे।

एक छोटे लड़के ने उस आदमी को देखा, वह उसके पास गया। वह आदमी बीमार था, उसने लड़के से पानी माँगा। लड़का पास के घर से पानी ले आया। बीमार ने पानी पिया और फिर लेट गया। लड़का पानी का बर्तन लौटा कर खेलने चला गया। शाम को वह घर आया। उसने देखा की

एक सज्जन उसके पिता को बता रहे हैं कि "आज, पाठशाला के सामने दोपहर के बाद एक आदमी सड़क पर मर गया।" लड़का पिता के पास गया और उसने कहा-"बाबूजी! मैंने उसे देखा था। वह सड़क पर पड़ा था। माँगने पर मैंने उसे पानी भी पिलाया था।" इस पर पिता ने पूछा, "फिर तुमने क्या किया।" लड़के ने कहा-"फिर मैं खेलने चला गया।"

पिता थोड़ा गंभीर हुए और उन्होंने लड़के से कहा-"तुमने आज बहुत बड़ी गलती कर दी। तुमने एक बीमार आदमी को देखकर भी छोड़ दिया। उसे अस्पताल क्यों नहीं

पहुँचाया?" डरते-डरते लड़के ने कहा-"मैं अकेला था। भला, उसे अस्पताल कैसे ले जाता?" इस पर पिता ने समझाया-"तुम नहीं ले जा सकते थे तो अपने अध्यापक को बताते या घर आकर मुझे बताते। मैं कोई प्रबंध करता। किसी को असहाय पड़ा देखकर भी उसकी सहायता न करना पशुता है।" बच्चों! आप सोचें कि आप क्या करते हो? किसी रोगी, घायल या दुःखिया को देख कर यथाशक्ति सहायता करते हो या चले जाते हो? आपको पता चलेगा की आप क्या हो- 'मनुष्य या पशु'?

श्रमयोग
SHRAMYOG
Village - Shyampur, PO - Ambiwala,
Digambar Murari Marg, Premnagar,
Dehradun, Uttarakhand (248007)

हम प्रतिबद्ध हैं अपनी सीखों व अनुभवों को आपके साथ बाँटने के लिये।

- श्रमयोग द्वारा आयोजित प्रमुख प्रशिक्षण कार्यक्रम**
- सहभागी ग्रामीण समीक्षा (PRA / PLA)
 - सहभागी प्राकृतिक धरोहर प्रबन्धन
 - पंचायती राज
 - आजीविका विकास हेतु ग्राम स्तरीय नियोजन

हमारी विशेषताएं :

- योग्य प्रशिक्षक
- कक्ष सत्र के साथ-साथ फील्ड अभ्यास
- प्रशिक्षण में सहभागी तौर तरीकों का प्रयोग
- समूह अभ्यास
- पठनीय प्रशिक्षण सामग्री



अधिक जानकारी के लिए निम्न Email व फोन पर सम्पर्क करें -
Email : info@shramyog.org, shramyog@gmail.com
Contact No. : 9761477705, 9411751625.

मीडिया पर सरकारी हमला

देश की सरकार ने दर्जनों सोशल मीडिया पोस्ट हटवा दी हैं, इनमें से अधिकतर पोस्ट ऐसी हैं जिनमें सरकार की आलोचना की गई थी। विशेषज्ञ कहते हैं कि सरकार छवि की चिंता में सूचना को काबू कर रही है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्विटर ने कहा है कि सरकार के कहने पर उसने कुछ पोस्ट भारत में देखे जाने के लिए ब्लॉक कर दी हैं। हालांकि ट्विटर ने यह नहीं बताया है कि किन ट्वीट्स को ब्लॉक किया गया है, लेकिन मीडिया में छपी खबरें बताती हैं कि अधिकतर पोस्ट कोविड-19 संकट के दौरान सरकार के रवैये को लेकर आलोचनात्मक थीं। फेसबुक और इंस्टाग्राम से भी ऐसी कुछ पोस्ट हटाए जाने की रिपोर्ट है। हमारा देश इस वक्त कोरोना वायरस महामारी के दूसरी लहर से गुजर रहा है, और संकट अभूतपूर्व है। अस्पतालों के बाहर दवाओं, बिस्तर और ऑक्सीजन की कमी के कारण दर्जनों मौतें हो रही हैं। ऐसे में हमारी सरकार की मेडिकल स्प्लाइं न करवा पाने को लेकर आलोचना भी हो रही है, आलोचक अपनी बात कहने के लिए सोशल मीडिया वेबसाइटों का सहारा ले रहे हैं जिन पर सरकार की निगाह रहती है। फरवरी में भी ट्विटर ने लगभग 500 ऐसे अकाउंट बंद कर दिए थे जो किसान आंदोलन के बारे में लिख रहे थे। ऐसा सरकार द्वारा कंपनी को कानूनी नोटिस जारी करने के बाद किया गया था, मीडिया की आजादी पर निगाह रखने वाली संस्थाओं और कार्यकर्ताओं का कहना है कि सरकार

राकेश द्वारा संकलित

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक शंकर दत्त ने नौटियाल प्रिंटर्स ग्राम माजरी माफी, मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से मुद्रित कर ग्राम श्यामपुर, पो0 अम्बीवाला, प्रेमनगर, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित किया।
सम्पादक-अजय कुमार
सभी पद अवैतनिक हैं।
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा)

ई-कचरा प्रबन्धन

एक कदम स्वच्छ पर्यावरण की ओर

ई-कचरा क्या है?

अनुपयोगी इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान जैसे कंप्यूटर, सी0पी0यू0, प्रिन्टर, की-बोर्ड, माउस, मोबाइल फोन, चार्जर, डिस्क, रेडियो, टेलीविजन, एयर कंडीशन, एल0ई0डी0 बल्ब इत्यादि ई-कचरा कहलाता है।

क्या आप जानते हैं?

हमारा देश अमेरिका, चीन, जापान व जर्मनी के बाद दुनिया का पाँचवाँ सबसे ज्यादा ई-कचरा पैदा करने वाला देश है। वर्ष 2019 में हमारे देश में 53.6 मिलियन टन ई-कचरा पैदा हुआ, जिसमें से सिर्फ 17 प्रतिशत ई-कचरा ही रीसायकल किया जा सका। ई-कचरे का उचित प्रबन्धन न होने से यह न सिर्फ पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता है, इससे मनुष्यों में स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेक समस्याएँ भी पैदा होती हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने वर्ष 2016 में ई-कचरे के प्रबन्धन के लिये दिशा निर्देश जारी किये, जिसमें सम्बन्धित पक्षों की निम्न जिम्मेदारियाँ तय की गई हैं।

ई-कचरे के बारे में सम्बन्धित पक्षों की जिम्मेदारियाँ

- किसी भी इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान के उत्पादक अपने उत्पाद के ई-कचरा बनने पर उसे उपभोक्ता से वापस लेंगे।
- इलैक्ट्रॉनिक एवं इलैक्ट्रिक सामान के दुकानदार अपने प्रतिष्ठान में ई-कचरा वापस लेने की व्यवस्था करेंगे व ई-कचरे के एवज में योजनानुसार उपभोक्ता को धनराशि का भुगतान करेंगे।
- क्लेक्शन सेन्टर उत्पादक, रीसायकलर अथवा डिसमेन्टलर की तरफ से ई-कचरा एकत्र कर सकेंगे व ई-कचरे का उचित मूल्य उपभोक्ता को देंगे।
- उपभोक्ता की जिम्मेदारी है कि ई-कचरे को क्लेक्शन सेन्टर में जाकर जमा करें। हम अपने जिले को ई-कचरा मुक्त जिला बनायेंगे। इसलिये विकास खण्ड स्तर पर चार ई-कचरा क्लेक्शन सेन्टर खोले जा रहे हैं। आपसे निवेदन है कि आप अपना ई-कचरा क्लेक्शन सेन्टर पर ही दें एवं ई-कचरे का उचित मूल्य प्राप्त करें।

निवेदक
सोसायटी ऑफ पॉल्यूशन एवं एनवायरमेण्ट कन्जर्वेशन साइंटिस्ट्स
115, किशन नगर, देहरादून